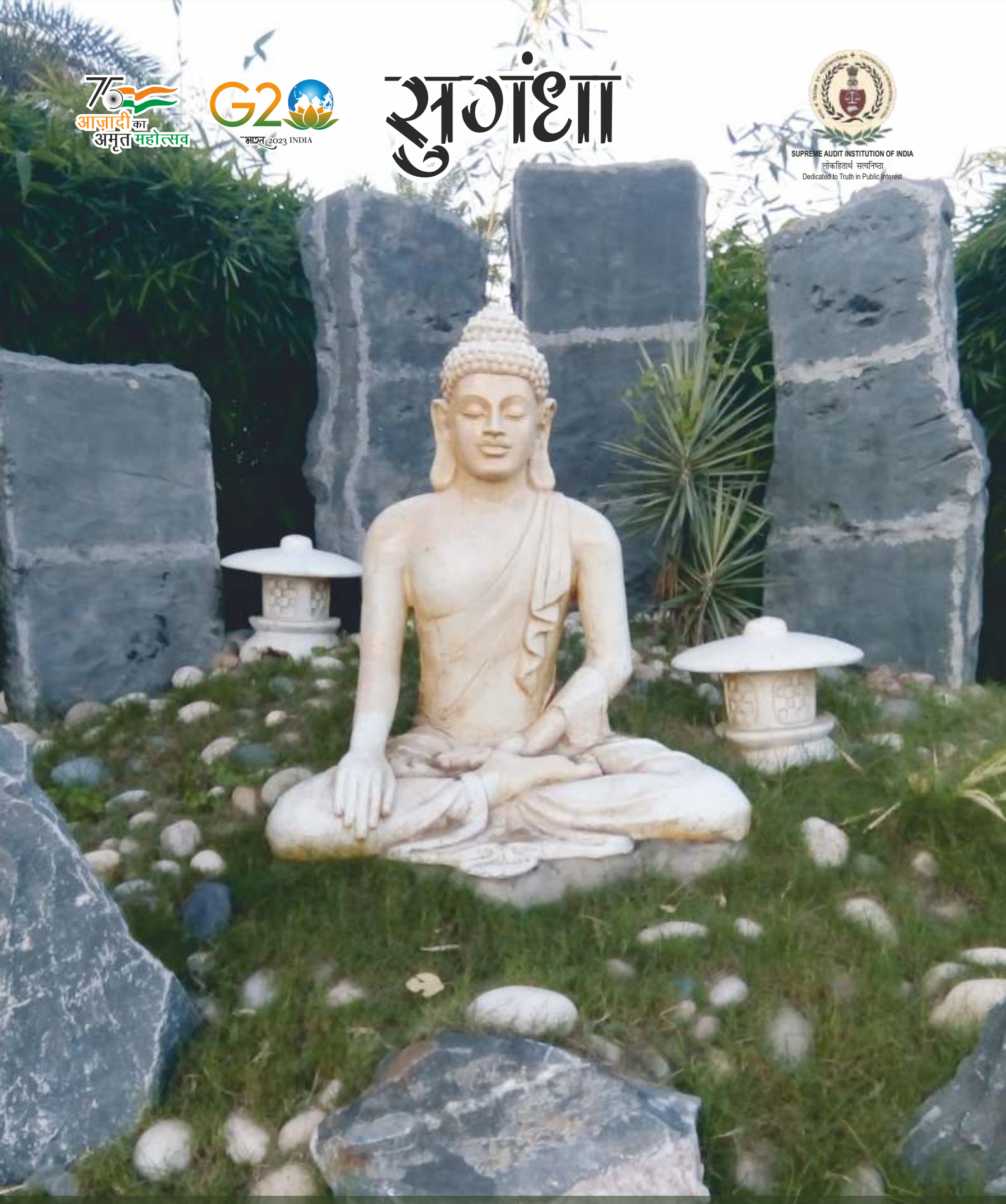
आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

सुगंधा

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



41 वाँ अंक
वर्ष 2022-2023

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017



कुर्सियों पर बाएं से:
श्री अंकुश गर्ग (उप महालेखाकार), सुश्री नाज़ली जे. शाईन (प्रधान महालेखाकार)
सुश्री रनदीप कौर औजला (वरिष्ठ उप महालेखाकार)

खड़े हुए बाएं से:
श्री गुरदीप कुमार (कनिष्ठ अनुवादक), सुश्री एकता (हिंदी अधिकारी)
सुश्री प्रियंका (कनिष्ठ अनुवादक), श्री महेंद्र सिंह (वरिष्ठ अनुवादक)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

सुगंधा

41 वाँ अंक
वर्ष 2022-2023

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017

प्रकाशन विवरण

मुख्य संरक्षक	:	**सुश्री नाज़ली जे. शाईन** प्रधान महालेखाकार
संरक्षक	:	**सुश्री रनदीप कौर औजला** वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
संपादक	:	**सुश्री एकता** हिन्दी अधिकारी
संपादन सहयोग	:	**श्री महेंद्र सिंह** वरिष्ठ अनुवादक **श्री गुरदीप कुमार** कनिष्ठ अनुवादक **सुश्री प्रियंका** कनिष्ठ अनुवादक **श्री आशीष कुमार जाँगीड़** कनिष्ठ अनुवादक
मुख पृष्ठ	:	**सैक्टर 31, चण्डीगढ़ में स्थित जापानी गार्डन** (सौजन्य – इंटरनेट)
अंक	:	**41वाँ अंक**
प्रकाशक	:	**राजभाषा कार्यान्वयन समिति,** कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017
मूल्य	:	**राजभाषा के प्रति निष्ठा।**
मुद्रक	:	**कैपिटल ग्राफिक्स** एस.सी.ओ. 133–135, सैक्टर 17–सी, चण्डीगढ़।

नोटः रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

अनुक्रमणिका

प्रकाशन विवरण		2
अनुक्रमणिका		3
गृह एवं सहकारिता मंत्री का संदेश		4–5
मुख्य संरक्षक का संदेश		6
संरक्षक का संदेश		7
संपादकीय		8
पाठकों के पत्र		9–10

आलेख

अयोध्या... सा पुरी सत्यनामा प्रकाशते	रमेश खटक	12–14
कृत्रिम बुद्धिमत्ता	आशीष कुमार	15
एक रिश्ता ऐसा भी	प्रियंका	16–17
सोमालिया के समुद्री लुटेरे	गुरदीप कुमार	18–21
पैसों की भूख	सुदेश कुमार	22
शिव जैसा ध्यानी नहीं, कोई...	सिकंदर कुमार	23–24
वृद्धावस्था	बीर सिंह	25–27
एक यादगार यात्रा	रमेश कुमार शर्मा	28–32

कविता

शायर की कलम से	अवतार सिंह (तारी)	39
माँ	एकता	40
ये दुनिया मतलबखोरों की	कुलविंदर सिंह	41
भूख	तुषार कांति सिन्हा	42
उदासी	रवि कुमार	43
जिंदगी	अंजू बाला	44
बेटी	नवीन कुमार	45
मेरी कहानी (औरत)	धर्म सिंह मीना	46
इंसान और पर्यावरण	अवतार सिंह (तारी)	47

कार्यालयीन समाचार

कार्यालय में आयोजित की गई गतिविधियाँ		48
सेवानिवृत्ति		49
श्रद्धांजलि		50

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हज़ार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हज़ार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

सत्यमेव जयते

मुख्य संरक्षक का संदेश



नाज़ली जे. शाईन
प्रधान महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

विभागीय पत्रिका ''सुगंधा'' के 41 वें अंक के प्रकाशन के लिए मैं सभी को बधाई देती हूँ। राजभाषा का विकास, कार्यालय में हिंदी को प्रोत्साहन देना तथा कार्यालय के कर्मचारियों को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करना विभागीय पत्रिकाओं का उदेश्य रहा है, जिसमें "सुगंधा" पत्रिका ने अमूल्य योगदान दिया है।

कार्यालय के कार्मिकों ने अपनी रचनाओं से "सुगंधा" को जीवंत रूप प्रदान किया है। कार्मिकों की रचनाएँ राजभाषा के प्रति निष्ठा को प्रदर्शित करती हैं। कार्यालय में हिंदी के लिए एक सहज वातावरण निर्मित करने में और रचनात्मक प्रतिभाओं को उभारने में "सुगंधा" सदैव सफल रही है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकार और संपादक मंडल एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

नाज़ली जे. शाईन

सत्यमेव जयते

संरक्षक का संदेश



रनदीप कौर औजला
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

गृह पत्रिका "सुगंधा" का नवीन अंक आपको सौंपते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। पत्रिकाओं का अविरत प्रकाशन राजभाषा की प्रगति को दर्शाता है। राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग भारतीय संस्कृति के विकास तथा राष्ट्रीय एकता अखंडता का परिचायक है। राजभाषा सम्पूर्ण भारत को जोड़ने वाली एक कड़ी है। भारत में प्रचलित भाषाओं में से हिंदी सबसे प्रचलित भाषा है। हिंदी की वैज्ञानिक योग्यता एवं क्षमता के आधार पर ही हिंदी को राजभाषा के रूप में चुना गया था।

आज राजभाषा का प्रयोग जीवन के हर क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है। केंद्र सरकार के कार्मिक होने के नाते हमारा दायित्व है कि हम राजभाषा के विकास में अपना योगदान दें। मुझे पूर्ण विश्वास है की "सुगंधा" पत्रिका हिंदी के प्रचार प्रसार में मील का पत्थर साबित होगी। मैं संपादक मंडल को पत्रिका के कुशल प्रकाशन के लिए बधाई देती हूँ।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

रनदीप

रनदीप कौर औजला

सत्यमेव जयते

संपादकीय



"सुगंधा" पत्रिका के संपादक के रूप में मेरा दूसरा प्रयास है। पिछले अंक के प्रकाशन से मिली आपकी प्रतिक्रियाओं से मुझे इस अंक के प्रकाशन हेतु अधिक प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिला है और इसी प्रेरणा के फलस्वरूप यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा परिचालित वार्षिक कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करते हुए तथा राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेशों के अनुपालन में हम अपने कार्यालय में हिन्दी में कार्य का माहौल तैयार करने के लिए हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन करते हैं।

भाषा के माध्यम से हम अपनी विरासत, संस्कृति और संस्कार भावी पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं। यह देखना बहुत ही सुखद है कि जिस प्रकार हिन्दी भाषा सभी देशवासियों के आपसी बंधुत्व को प्रगाढ़ करती है उसी प्रकार "सुगंधा" भी कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों तक सुगमता से पहुँचकर आपसी विचारों को आदान–प्रदान करने का सेतु बनी हुई है।

इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने के लिए आप सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई। आशा है कि आगामी अंकों को और अधिक आकर्षक बनाने और इसे नई ऊंचाइयों तक ले जाने में आप सभी की रचनात्मक भागीदारी, सुझाव और प्रतिक्रियाएं निरंतर मिलती रहेंगी।

शुभकामनाओं सहित

एकता
हिंदी अधिकारी

पाठकों के पत्र



भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, ब्लॉक-ए,आर्मी तल, रक्षा कार्यालय परिसर, अफ्रीका एवेन्यू, नई दिल्ली-110023
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT, DEFENCE SERVICES,
3rd FLOOR, A-BLOCK, DEFENCE OFFICE COMPLEX, AFRICA AVENUE, NEW DELHI - 110023

संख्या: /ए हिंदी/अंक पत्रिका/2023-24 दिनांक: 18/07/2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़-160017

विषय: त्रैमासिक पत्रिका 'सुगंधा' के 40 वें अंक की समीक्षा हेतु।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'सुगंधा' के 40 वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका के सफल संपादन हेतु आप सभी को बहुत-बहुत बधाई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रासंगिक हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगी वे हैं श्री दीपक कुमार शर्मा का लेख 'समसामयिक एक अनिवार्यतीय खतरा', श्री सुरेन्द्र पाल का लेख व्यंग्य 'बेचारी नाक', श्री दीपक कुमार का एक मार्मिकपूर्ण प्रसंग' एवं श्री रोहित सैनी की कविता 'अनगिनी प्रकृति' आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

भवदीय,
(राजीव कुमार)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी अनुभाग
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली



International Centre for Information Systems & Audit
International Training Centre of Comptroller & Auditor General Of India
www.cag.gov.in/icisa/en

संख्या: 367 Admn-I Est/ICISA/1/2018-Admn-part1(efile No.8467) दिनांक 11.09.2023

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा)
पंजाब,चंडीगढ़-160017

विषय: सुगंधा पत्रिका के 40 वें अंक का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिंदी पत्रिका सुगंधा के 40 वें अंक की 6 प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। पत्रिका के इस अंक में सभी लेख और रचनाएँ विचार सरल पठनीय एवं प्रशंसनीय है।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटी बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल आईसीसा नोएडा की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (प्रशासन)

A-52, Sector-62, Institutional Area, Phase-II, Noida - 201309 (U.P.) INDIA
Tel: +91-120-2400050, 51, 52 Fax: +91-120-2400041 / 2401430



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता - 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

सं. हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/सुगंधी/51

दिनांक: 30.05.2023

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब
चंडीगढ़ - 160017

विषय: हिंदी पत्रिका "सुगंधा" के 40वें अंक की प्राप्ती

महोदय/महोदया,

पत्र सं. हि.अ./सुगंधा प्रेषण/2023-24/01 दिनांक 29.05.2023 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "सुगंधा" के 40वें अंक की कॉपियां प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक सज्जा-कलाकृति सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं विविध रंग से की विशेषकर जिस पौराणिक की रचना 'महान तकनीकी विकास और पहली पारमैत्रिक समस्या' की कृति उत्तम जी की रचना 'बेचारी नाक (व्यंग्य)' सुरेंद्र पाल जी की रचना 'सॉरी, मैं गलत हूँ' तथा सुश्री सरिता सहगल जी की रचना 'कलयुग की सीता' अभूतपूर्व है। अन्य सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./पत्र.71/ आवक - 21 दिनांक 27.06.2023

प्रति,
हिन्दी अधिकारी /हिन्दी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार,(लेखापरीक्षा)
पंजाब चंडीगढ़ -160017

विषय - हिन्दी पत्रिका "सुगंधा" 40वें अंक की प्राप्ती बाबत ।

संदर्भ- पत्र कमांक-हि.अ./ सुगंधा प्रेषण/ 2023-24/07 दिनांक 29.05.2023 को ई-मेल द्वारा प्राप्त ।

महोदय / महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा ई-पत्रिका "सुगंधा" 40वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर कोविड का आम जन- जीवन पर प्रभाव, बढ़ता तकनीकी विकास और घटती मानसिक क्षमता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस), बेचारी नाक (व्यंग्य), कलयुग की सीता, कुदरत, आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं ।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

27/6/23
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्ष

Admn/रा.प्र.सं./05(671)/2022-23

I/285426/2023

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) लखनऊ
तृतीय तल, ऑडिट भवन, टी.सी.-35-V-1, विभूति खण्ड, गोमती नगर,
लखनऊ - 226010(उत्तर प्रदेश)

दिनांक :
31/05/2023

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़

विषय:- हिंदी पत्रिका "सुगंधा" के 40वें अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "सुगंधा" के 40वें अंक ई-पत्रिका प्राप्त हुई है।

पत्रिका का यह अंक नारी-सशक्तिकरण एवं मूल्य संवर्धन के विषय बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचना "बेबाकी नाक (नथ)", "हाँ, मैं गर्व हूँ" एवं "जीवन पथ" बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ अत्यंत रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामनाएँ।

Signed by Devendra Pratap Srivastava
Date: 31-05-2023 13:15:36
Reason: Approved

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(प्रशासन)

हिंदी/132

I/287000/2023

संभागीय प्रशिक्षण केन्द्रयागढ़
क्षेत्रीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, संजौली पराड़ा मार्ग, प्रयागराज - 211001
REGIONAL TRAINING INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sanjoli Parda Marg, Prayagraj – 211001
Phone : 2421364, 2421063, 2420667 Fax : 0532-2423666

सेवा में,
मंत्रिमंडल सचिव महालेखाकार
कार्यालय -प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़ - 160017

विषय:- हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' का 40वां अंक।

संदर्भ:- ईमेल के माध्यम से प्राप्त पत्र दिनांक 30 मई 2023

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' का 40वां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सादर धन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ, साज-सज्जा, कलेवर एवं मुद्रण बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं उच्च स्तर की एवं ज्ञानवर्धक हैं। समस्त रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। विशेषत: 'बदल तकनीकी विकास और घटती मानवीय क्षमता', 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता', 'प्रकृति संस्कृति', 'जीवन पथ' एवं 'कलयुग की सीता' सराहनीय रचनाएं हैं। पत्रिका में प्रस्तुत अन्य लेख भी रोचक एवं अच्छे हैं। पत्रिका में प्रस्तुत कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र परिवेश की शोभा को और बढ़ा रहे हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

Signed by Kaushlesh Singh
Date: 14-06-2023 14:48:48
Reason: Approved

कार्यालय: निदेशक,वित्त एवं संचार लेखा परीक्षा कार्यालय, बेंगलूरु
OFFICE OF THE DIRECTOR
FINANCE & COMMUNICATION AUDIT OFFICE, BENGALURU

स.हिं.का./हि.पत्रि.ब./2023-24/ 411 दिनांक: 07.07.2023

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चण्डीगढ़-160017

विषय: हिंदी ई-पत्रिका 'सुगंधा' के 40वें अंक की पावती ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका 'सुगंधा' के 40वें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई। ज्ञानवर्धकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व लुभावना है। सभी एकत्रों की कविता 'हाँ, मैं गर्व हूँ' 'मैं गर्व की अनीता को सफलतापूर्वक मानवीय रूप दिया गया है। इसके अतिरिक्त सुश्री अंकिता सिंह की कविता 'नारी दिवस' तथा श्री सुरेन्द्र प्रसाद का लेख 'बेबाकी नाक' आदि रचनाएँ रुचिकर एवं सराहनीय हैं। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

धन्यवाद !

भवदीय,
हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर -751017 (ओडिशा)

रा.-रा.भा.अ./पत्रिका/2023-24 दिनांक-13.06.2023

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
प्लाट सं.-21, सेक्टर- ई,
चंडीगढ़-160017
ईमेल- agaupunjab@cag.gov.in

विषय- हिंदी पत्रिका **"सुगंधा"** के **40वें** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका **"सुगंधा"** का **40वाँ** अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय है:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	रमेश	रामायण का एक संक्षिप्त वृत्तान्त
2.	विक्रम सिंह	तितली रानी
3.	एकता	हाँ, मैं गर्व हूँ
4.	तमन्ना सहगल	कलयुग की सीता

इस पत्रिका को सफल एवं उत्कृष्टकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीय,
(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

दूरभाष नं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoast@cag.gov.in / rajbhasha.pda@gmail.com

आलेख

अयोध्या... सा पुरी सत्यनामा प्रकाशते



रमेश खटक

वर्तमान के सोशल मीडिया के दौर में बार–बार रामायण या श्री राम जी के अस्तित्व पर उठते सवालों के बीच रामायण का समग्रता से स्वाध्याय करने का निश्चय किया। वैसे तो रामायण की विषय सामग्री से हर भारतीय अवश्य परिचित मिलेगा परन्तु इस महाग्रंथ के नियमित पाठक बहुत कम मिलेंगे। मैने स्वयं ऐसे अनेक विद्वान देखें है जो रामायण पर बहुत तर्क–वितर्क करते हैं लेकिन उन्होंने जीवन में कभी पुस्तक प्रति नहीं देखी, विद्याक्षेत्र में ऐसा दृष्टिकोण अमान्य होता है। इस सम्बन्ध में ज्यादातर केवल मिथ्या प्रलाप ही मिलता है। सत्य अन्वेषण हेतु मौलिक तथ्यों और सम्पूर्ण उपलब्ध सम्बन्धित ग्रंथों का अध्ययन करना आवश्यक होता है । भारतीय दृष्टिकोण से इतिहास वर्ग का यह महाकाव्य प्रथमदृष्टया अति साधारण सी कथा कहानी लगती है परन्तु जब इस ग्रन्थ को स्वविवेक से निरंतर पढ़ना आरम्भ करते हैं तो निश्चय ही पाठक के सारे दुराग्रह समाप्त हो जाते हैं और इसी सार पर पहुँचते हैं कि रामायण मात्र एक इतिहासवृत्त नहीं है अपितु पुरुषार्थ और उन्नत राष्ट्र–जीवन का आधार और शिखरतम बिंदु है। इसका हर एक व्यक्तित्व, कथानक, संवाद, घटना, स्थान केवल वही अर्थ नहीं देता जो आप सामान्यतः समझते हैं अपितु इनके यथार्थ इससे भी परे है। इस महाकाव्य का बार –बार पारायण नित नए विचार प्रवाहित कर देता है। रामायण अन्तः और बाह्यः और इनसे भी आगे की अयन (यात्रा) है। यह बहुअर्थी है यथा यह श्री राम जी का अयन (भौतिक मार्ग), श्री राम जी तक पहुंचने का अयन (अध्यात्मपथ–राम रमा रमनं समनं, भव ताप भयाकुल पाहि जनम) और राम जी द्वारा स्थापित अयन (राष्ट्र के उत्कर्ष का श्रेष्ठ मार्ग), ज्ञान–कर्म–उपासना का एकानिष्ठ प्रकटनायन है।

मेरी अपनी स्वाध्याय सूची के आधार पर रामायण में सहज सरल ज्ञान, विज्ञान के संदर्भ, ऋतुओं का रोमांचकारी वर्णन, ज्योतिष नक्षत्रों की स्थिति संबंधी सैंकड़ों श्लोक, भवनों वास्तु विद्या का विवरण, नगरों और उसके नागरिकों की अपार समृद्धि, पुरातन इतिहास की पौराणिक कथाएं वन्य जीवों के क्रियाकलाप, वनस्पतियों और वन्य जीवों का विवरण, उनके मार्ग में आये अनेक पर्वत एवं चोटियों का सविस्तार वर्णन, नदियों, सरोवरों और उनके अंदर उत्पन्न होने वाले बहुरंगी कमल–उत्पलों आदि जलीय सामग्री का सुंदर वर्णन, अनेक नगरों की स्थापना, विकास और पराभव का इतिहास, राजनैतिक, कूटनीतिक उपदेश, राज्य की आर्थिक नीति–निर्धारण और राज्य सञ्चालन के सिद्धांतों की परिचर्चा, वाद–संवाद में सम्पूर्ण पृथ्वी का भौगोलिक वर्णन, सभी दिशाओं में अवस्थित देशों–प्रदेशों का वर्णन आदि से संबंधित इतने श्लोक हैं कि इन विषयों पर प्राचीन काल से आज तक इसके आधार पर हजारों ग्रंथों का निर्माण हुआ है अभी भी सतत् चल रहा है। रामायण के विभिन्न सर्गों में आये कथानकों को पढ़ते हुए ऐसा अनुभव होता है कि ये घटनाक्रम आपके समक्ष घटित हो रहा है। तमसा नदी पर क्रौंच पक्षी प्रकरण से शुरू हुआ घटनाक्रम अपने आप में बहुत गूढ़ है। एक मार्मिक घटना से महर्षि वाल्मीकि जी ने सम्पूर्ण रामकथा की आधारशिला रख दी। क्रौंच के वियोग में क्रौंची के चीत्कार से विहलित ऋषि के हृदय का शोक वाणी द्वारा उच्चारित होकर श्लोकरूप हो गया।

रामायण में विवेचित विविध विषयों में से एक महत्वपूर्ण वर्णन अयोध्यापुरी का विवरण अत्यंत रोचक है। रामायण में अयोध्यापुरी का वर्णन आपको आश्चर्यचकित कर देगा। विशाल नदी सरयू के किनारे स्वयं महाराज मनु ने इस आयताकार 12 योजन लम्बाई 3 योजन चौड़े (एक योजन में 12.8 किलोमीटर होता है) विस्तार वाले

महानगर का निर्माण करवाया था जो आधुनिक मुंबई महानगर से 3 गुणा बड़ा था। इस महानगर से चारों ओर निकलने वाले राजमार्ग बहुमार्गी थे। यह नगर बड़े–बड़े कपाटों और सुरक्षा घेरों से युक्त था। यह नगर सब प्रकार के यंत्रों–महायंत्रों, अस्त्र–शस्त्रों, सब प्रकार के शिल्पियों, बड़े–बड़े बाजारों से युक्त था। इस महानगर में ऊँची–ऊँची अट्टालिकाओं पर 'उच्चाट्टालध्वजवतीं शतघ्नीशतसङ्कुलाम्' अर्थात सैंकड़ों की संख्या में तोपें व्याप्त थी। उस पुरी के चारों ओर गहरी खाईयां खुदी थी जिनको लांघना दुर्गम था उस पुरी में "नानादेशनिवासैश्च वणिग्भिरुपशोभिताम्" अर्थात् विभिन्न देशों के सामंतसंघ और व्यापारीगण वैश्य उसकी शोभा बढ़ाते थे। इससे यह संकेत मिलता कि महाराज दशरथ के शासनत्व में उपस्थित ये सभी सामंतराज संघ और विभिन्न देश निवासी वैश्य निश्चय ही वर्तमान काल की भांति राजधानी में आर्थिक राजनैतिक सलाहकार और बड़े–बड़े उपक्रमों के प्रतिनिधि थे। वहां पर्वतों के समान गगनचुम्बी महलों का निर्माण नाना प्रकार के रनों से हुआ था। उस नगर में बहुसंख्यक कूटागार थे अर्थात कूटभाषा के संकेतक समझने, दूसरे राष्ट्रों से कूटभाषा में व्यवहार करने और कूटों का यथार्थ हल करने हेतु गुप्तचर विभाग के भवन (यथा वर्तमान के विदेश मंत्रालय का Cypher Department) थे। इसी संदर्भ में एक अन्य अति महत्वपूर्ण शब्द आया है कि उस महानगर में ''चित्रामष्टापदाकारां सर्वरत्नसमाकीर्णी विमानगृहशोभिताम् विमानगृह'' अर्थात एयरपोर्ट था जो कि द्यूतफलक के समान अष्टाकार और अत्यंत चमकीला था।

कम्बोज (आधुनिक अफगानिस्तान का पर्वतीय क्षेत्र) और बाह्लीक (बलख–बुखारा) देशों में उत्पन्न श्रेष्ठ काले घोड़ों से, वनायु देश (कोशाकार हलायुध ने 'पारसीक वनायुजाः' कहकर वनायु को पारसीक देश या ईरान माना है) के श्रेष्ठतम घोड़ों से यह अयोध्यापुरी भरी रहती थी। विंध्य और हिमालय पर्वतों में उत्पन्न होने वाले अत्यंत बलशाली मदमत गजराजों, ऐरावत कुलों में उत्पन्न, महापदम वंश के, अञ्जन और वामन (छोटे कद के हाथी) से भी यह नगर भरा पूरा रहता था। हिमालय पर्वत पर उत्पन्न भद्रा जाति के, विन्ध्य पर्वत पर पैदा हुए मन्द्रजाति के और सह्याद्रि पर्वत पर उत्पन्न मृग जाति के हाथी भी वहां भरे हुए थे। भद्र, मन्द्र और मृग जाति के हाथियों के परस्पर मेल से उत्पन्न संकर किस्म के हाथियों का अति सूक्ष्मता से वर्णन बताता है कि इस नगर में पशु–चिकित्सा विज्ञान कितने उन्नत शिखर पर था। उस महानगर का जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक था और उस भूमि का जल इतना मीठा था मानो ईख का रस हो ।

उस महानगर में नगरवासी सभी मनुष्य प्रसन्न, धर्मात्मा, वेदज्ञान श्रोता, सत्यवादी और संतुष्ट थे। उस पुरी में कोई भी ऐसा कुटुम्बी नहीं था जिसके पास श्रेष्ठत्तम उपभोग की वस्तुओं का संग्रह अत्यधिक मात्रा में नहीं हो। कोई भी कानों में कुण्डल रहित, मुकुटविहीन और पुष्पहार से शून्य, स्वर्ण आभूषणों से रहित, हाथ के आभूषण से हीन (कृपण) नहीं था। कोई ऐसा नहीं था जिसके धर्म, अर्थ और काममय पुरुषार्थ सिद्ध नहीं हो गए हो और कोई ऐसा नहीं था जिसके पास गाय–बैल, घोड़े, धन–धान्य आदि का अभाव हो। इस अयोध्या पुरी में कोई भी कामी, कृपण, क्रूर, मूर्ख और अविद्वान– नास्तिक देखने को भी नहीं मिलता था। वहां के सभी स्त्री पुरुष धर्मशील, संयमी, सदा प्रसन्न और सदाचारी थे। अयोध्या नगर में कोई भी नर–नारी श्रीहीन, रूपरहित और राष्ट्रभक्ति से शून्य नहीं था। यह इस महानगर का उच्चतम मानव विकास सूचकांक और राष्ट्र की प्रजा का प्रसन्नता सूचकांक था।

इस महान साम्राज्य के प्रबंधन हेतु आठ महामंत्रियों की मंत्रिपरिषद थी जो कि अष्टप्रधान की प्राचीनतम सनातन मान्यता को बल देती है। इन मंत्रियों के गुण, दक्षता, योग्यता और कुशलता का विस्तृत वर्णन रामायण

में किया गया है। महाराज दशरथ के शासनत्त्व में गुप्तचरों का विशाल अनुभाग और चतुरंगिणी सेना उनके क्षेत्र विस्तार के बारे में बहुत कुछ बताते हैं। वे गुप्तचरों द्वारा अपने मित्र और शत्रु–राज्यों के वृतांतों पर दृष्टि रखते थे। प्रजा का धर्मपूर्वक पालन करते थे और अधर्म से दूर रहते थे। मंत्री और उनके राजकीय अधिकारीगण समस्त देशों और कालों में गुणवान सिद्ध थे। संधि और विग्रह के उपयोग और अवसर का उन्हें अच्छी तरह ज्ञान था। वे स्वभाव से ही सम्पत्तिशाली और देवी सम्पति से युक्त थे। इनके प्रबंधन और कुशलता के कारण सम्पूर्ण राष्ट्र और नगर में पूर्ण शांति थी।

युवराज श्री राम जी के रामवेश्म (महल) का अत्यंत मनोहारी, वैभवशाली वर्णन किया गया है। उस कैलाश पर्वत के समान श्वेत प्रभा से प्रकाशित विशाल भवन का मुख्य अग्रभागद्वार स्वर्ण देव प्रतिमाओं से अलंकृत था। उसके विशाल प्रवेशद्वार के कपाट और तोरण पर मणि और मोती जड़ित थे। वह सारा भवन शरद ऋतु के बादलों की भांति श्वेतक्रांति से युक्त, दीप्तिमान और मेरुपर्वत के सामान शोभायमान था। सुवर्णनिर्मित पुष्पों की मालाओं के बीच पिरोई हुई बहुमूल्य मणियों से वह भवन सजा हुआ था। दीवारों में जड़ी हुई मुक्तामणियों से व्याप्त होकर जगमगा रहा था। चन्दन और अगर की सुगंध, कलरव करते मयूर और उसके सरोवरों में कलोल करते सारस, नाना प्रकार के बहुरंगी पक्षी उसकी शोभा बढ़ रहे थे। उस भवन के परिसर में सहस्त्र की संख्या में जन कार्यरत थे। शिल्पियों ने उस भवन की नक्काशी इतनी सुंदरता से की थी कि वह अपनी उत्कृष्ट शोभा से समस्त प्राणियों के मन और नेत्रों को आकृष्ट कर लेता था। इसी प्रकार महाराज दशरथ के महाप्रासाद का भी विस्तृत वर्णन मिलता है जो अपनी ऊंचाई से आकाश को लांघते हुए से प्रतीत होते थे, जिसमें विमानाकार क्रीड़ागृह बने हुए थे और वे महल अपनी श्वेत आभा से प्रकाशित होते थे।

इस पुरी के निवासियों का वैभव अद्भुत था। इसका अत्युत्तम दर्शन तब मिलता है जब महामंत्री सुमंत्र जी श्री राम जी को राज्याभिषेक हेतु खुले रथ में अयोध्यापुरी के राजमार्गों से लेकर दशरथ महल जाते हैं। उनके मार्ग में वाद्यों की ध्वनि वन्दीजनों के स्तुतिपाठ, शूरवीरों के सिंहनाद सुनाई देते है। महलों की दीर्घाओं (बालकनी) में बैठी वस्त्राभूषणों से विभूषित वनिताएं सब ओर से श्री राम जी पर ढेर के ढेर सुंदर पुष्पवर्षा कर रही है। उस समय महलों की अट्टालिकाओं और भूतल पर खड़ी सर्वांगसुंदरियां श्री राम जी की मंत्रोच्चारण से स्तुति गाए जा रही हैं। यात्रा करते हुए श्री राम जी ने उस विशाल राजमार्ग को देखा जो हथियों, रथों और घोड़ों से खचाखच भरा हुआ था। उसके दोनों और प्रचुर रत्नों से भरी हुई दुकानें थी और वह राजमार्ग अत्यंत विमल था।

तीन योजन के विस्तार वाली इस पुरी में दो योजन भूमि तो ऐसी थी जिसमें पहुँच कर किसी के लिए युद्ध करना असम्भव था इसीलिए यह पुरी अयोध्या इस सार्थक और सत्य नाम से प्रकाशित होती थी और यह सहस्त्रों सांगोपांग वेदों के पारंगत महाविद्वानों, ब्राह्मणों और सहस्त्रों महारथी, अतिरथी महावीरों, वैश्विक स्थानीय व्यापारियों और राजकीय कर्मियों, सेवकों से भरी पूरी थी जिस पर महाराज दशरथ शासन करते थे। ये वैभवशाली समृद्ध संस्कृति की झलक मात्र है। प्राचीन भारत में स्थाप्य कला के बहुत वृहद और विस्तृत ग्रन्थ विद्यमान थे। आज भी शिल्पकला से जुड़े सैंकड़ों ग्रंथों की पांडुलिपियां उपलब्ध हैं जिनको पढ़ कर अनुभव होता है कि समृद्धि और सम्पन्नता सनातन संस्कृति के अभिन्न अंग है। इस संस्कृति की जीवनशैली में कोई विपन्न नहीं हो सकता। इसी प्रकार भौतिक स्वर्ग का वर्णन महाराज बाली सुग्रीव की किष्किंधा और कुबेर की सुवर्ण निर्मित दुर्गम लंका में भी आया है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) सरल और सुगम बनाता मानव जीवन अथवा खतरे में भविष्य



आशीष कुमार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A.I.) कंप्यूटर विज्ञान की ऐसी विधा है जिसके द्वारा एक मशीन को मनुष्यों के समान सोच–समझ में सक्षम बनाते हुए निर्णय लेने की क्षमतायुक्त बनाया जाता है। एक प्रोग्रामिंग (Programming) जो डाटा संकलन के आधार पर मानव मस्तिष्क की तरह कुशलता से कार्य संपादित करता है।

वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी (A.I.) के इस क्रांतिकारी परिदृश्य में (A.I.) मानव के दैनिक जीवन में चर्चा एवं कौतुहल का विषय बन गया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म (फेसबुक, यू–ट्यूब, इंस्टाग्राम आदि) पर दिखाए जाने वाले विडियो, रील, फोटोग्राफ, ऑनलाइन शॉपिंग के दौरान आपके पसंदीदा उत्पादों एवं वस्तुओं को समझ कर उसे विभिन्न तरीकों एवं माध्यमों के द्वारा आपके समक्ष लगातार प्रस्तुत करते रहना कृत्रिम बुद्धिमता (A.I.) का सजीव उदाहरण है।

ऑनलाइन बैंकिंग, रेलवे टिकट की बुकिंग से लेकर किसी भी बड़े संस्थानों से जुड़ी जानकारियां प्राप्त करने के दौरान आने वाली कठिनाइयों तथा आपके प्रश्नों का तत्काल उत्तर देने के लिए एक ऑनलाइन असिस्टेंट (ILA, IRA, SIRI, ALEXA आदि) सदैव उपलब्ध रहते हैं। इसी प्रकार स्वास्थ्य के क्षेत्र में क्रॉनिक बीमारियों से विविध जटिलताओं को आसानी से समझते हुए सटीक समाधान प्रस्तुत करने एवं चिकित्सकों को निष्पक्ष निर्णय लेने में (A.I.) काफी उपयोगी साबित हो रहा है (उदाहरणार्थ : रोबोटिक शल्य–चिकित्सा एवं कैंसर की तरह जानलेवा बीमारियों के निदान में इत्यादि)।

वाणिज्य–व्यापार के क्षेत्र में कारोबार की उन्नति एवं अनुमानित लाभ को हासिल करने में A.I. (ए.आई.) द्वारा संचार प्रणाली, बाजार अनुसंधान तथा उपभोक्ताओं के व्यवहार, पसंद–नापसंद का सटीक आंकलन किया जाता है जिससे प्रबंधन (Management) को सटीक निर्णय लेने में काफी सुविधा होती है।

राष्ट्र की सुरक्षा एवं प्रतिरोध–प्रणाली को आधुनिक बनाने, नए प्रकार के अस्त्र–शस्त्र के निर्माण, प्रतिरोध तरीकों (Defence System) को अद्यतन (update) एवं विकसित करने में A.I. बहुत उपयोगी साबित हो रहा है। सैनिकों एवं नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में भी मददगार है।

(A.I.) के संदर्भ में उपरोक्त वर्णित/उल्लेखित विशेषताओं एवं उपयोगिताओं के आधार पर यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि A.I. (ए.आई.) ने मानव –जीवन में ऐसी क्रांतिकारी बदलाव की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है जो कि त्रुटिहीन शून्य–जोखिम के साथ 24X7 उपलब्ध है। A.I. आम इंसानों के विपरीत बिना ब्रेक के अंतहीन काम करते हुए सटीक परिणाम दे सकता है। परंतु साथ ही साथ इसके दुष्परिणाम मानव के भविष्य को अप्रत्याशित खतरे में भी डाल सकता है। जब मशीन खुद ही निर्णय लेने लग जायेंगी तो उसे नियंत्रित करना अत्यंत कठिन हो जाएगा। मशीनें असंवेदनशील होती हैं तथा नैतिकता जैसी मानवीय विशेषता A.I. में शामिल नहीं की जा सकती है। यह पहले से फीडेड (Feeded) डाटा एवं पूर्व अनुभवों के आधार पर कार्य करने में सक्षम हो सकता है लेकिन कोई रचनात्मक दृष्टिकोण नहीं अपना सकता है। A.I. का निरंतर विकास और उपयोग इंसानों को आलसी बनाता जाएगा एवं उसकी जगह लेते हुए बेरोजगारी की विकराल समस्या उत्पन्न कर सकता है। साथ डाटा संग्रहण द्वारा व्यक्तिगत गोपनीयता के लिए सदैव खतरा बना रहेगा। अतएव जीवन के हर एक क्षेत्र में इसके निरंतर बढ़ते उपयोग पर ध्यानपूर्वक विचार किया जाना अत्यंत आवश्यक है। इसका समुचित एवं तार्किक उपयोग मानव जीवन को सरल एवं सुविधाजनक बनाने हेतु सुनिश्चित किया जाना चाहिए साथ ही साथ संभावित खतरों एवं समस्याओं पर भी विचार करना लाजमी है।

एक रिश्ता ऐसा भी


प्रियंका

यह उस समय की बात है जब पायल स्कूल में पढ़ती थी। उसके स्कूल में एक अध्यापिका थी जो उन्हें हिंदी पढ़ाती थी और वह उनकी कक्षा की मुख्य अध्यापिका भी थी। उन्होंने इतनी लगन और मेहनत से उन्हें पढ़ाया था उन्हें लगा कि हमारी हिंदी भाषा कितनी अच्छी और सरल है। पायल की अध्यापिका सभी विद्यार्थियों को मेधावी परीक्षा में ले गई थी जिसमें उसके साथ कुछ अन्य विद्यार्थियों ने भी भाग लिया था। सभी बच्चे परीक्षा देकर आ गए उस समय उनके स्कूल की वार्षिक परीक्षा चल रही थी, जब मेधावी परीक्षा का परिणाम आया और जब वह परीक्षा देने आई तब उसे पता चला कि वह उस परीक्षा में उत्तीर्ण हुई है। उसे यह सुनकर बहुत खुशी हुई और उसने घर जाकर सबको यह बात बताई। उसकी अध्यापिका ने उसे बताया कि इसका पुरस्कार लेने उन्हें वहीं जाना होगा जहां परीक्षा देने गए थे। उसे तो बस अब उस दिन का इंतजार था जब उसे वहां पुरस्कार मिलना था। वह अपने पापा के साथ वहां गई और उसकी अध्यापिका भी वहां आई उनके चेहरे पर पायल से ज्यादा खुशी थी। उस खुशी और प्यार को उसने बाद में और भी ज्यादा महसूस किया। वहां उन्हें शिक्षा निदेशक द्वारा पुरस्कार दिए गए। पुरस्कार लेकर पायल और उसके पापा निकल ही रहे थे तभी उसके पापा ने पायल की अध्यापिका से कहा कि मैडम आपका घर रास्ते में ही पड़ेगा तो हम आपको भी घर छोड़ देंगे। मैडम उनके साथ चलने के लिए तैयार हो गई। इसके बाद पायल के पापा ने उन्हें बोला कि मैडम मुझे पायल का स्थानांतरण प्रमाण पत्र लेने आना है कब तक आ सकता हूं ? मैडम यह बात सुनकर चौंक गई और पूछने लगी क्यों? पायल तो पढ़ाई में इतनी अच्छी है हमेशा प्रथम आती है, तो फिर स्थानांतरण प्रमाण पत्र क्यों ? पायल के पापा ने मैडम को कारण बता दिया हालांकि पायल भी इस बात से बहुत दुखी थी क्योंकि उसने बचपन से उसी स्कूल में पढ़ाई की थी, लेकिन जहां रहते थे वहां से घर शिफ्ट करना था इसलिए उसके पापा ने यह सब कहा। इतना बता कर उसके पापा ने सारी बात मैडम को बता दी कि वहां से स्कूल दूर पड़ेगा इसलिए घर के नजदीक ही दाखिला करवा देंगे। यह बात सुनने में बहुत मामूली सी लगती है लेकिन इसका असर किसी पर बहुत अधिक हो सकता है इसका पता पायल को 31 मार्च को चला जब उनके वार्षिक परीक्षा के परिणाम घोषित करने मैडम कक्षा में आई। पायल एक बार फिर प्रथम आई थी। मैडम ने सबके परिणाम बताए और फिर मैडम को अचानक पता नहीं क्या हुआ मैडम सबको बताने लगी कि पायल जा रही है उसके पापा ने उसका स्थानांतरण प्रमाण पत्र लेने के लिए कहा है। यह बात जब उसके पापा ने मुझे बताई तो मैं घर जाकर उदास होकर बैठ गई और रोने लगी उस दिन मैं कुछ खा भी नहीं पाई मेरे बच्चों ने मुझे समझाया कि मम्मी ऐसे नहीं रोते स्कूल में बच्चे पढ़ रहे हैं, तो आयेंगे–जायेंगे भी आप उस लड़की के लिए ज्यादा भावुक मत हो, इतना कहते–कहते मैडम के आंखों में दोबारा आंसू आ गए और पायल को यह समझ भी नहीं आ रहा था कि वह इस बात पर क्या प्रतिक्रिया दे ? इतने में उसकी घनिष्ठ मित्र ने उसे अध्यापिका के पास जाने के लिए कहा। पायल उनके पास जाकर ये कह ही रही थी कि मैडम आप प्लीज मत रोइए इतने में उन्होंने उसे अपने गले से लगा लिया। उस दिन मैडम के गले लग कर उसे ऐसा लगा कि सच में एक अध्यापक अपने विद्यार्थियों से बहुत प्यार करता है, लेकिन वह उन विद्यार्थियों में सबसे ज्यादा खुशनसीब है क्योंकि ये प्यार एक विद्यार्थी से भी ऊपर था, जैसे मां अपने बच्चे से बिछड़ते समय रोती है, वो कुछ ऐसा अनुभव था। ये सब देख और सुनकर उसकी कक्षा के बच्चे भी हैरान थे कि मैडम रो रही हैं और पायल स्कूल छोड़ कर जा रही है। उनमें से एक विधार्थी पायल के पापा को कक्षा में

लेकर आ गया फिर पायल की अध्यापिका ने उसके पापा से कहा कि आप पायल को मत ले जाओ आप उसे मुझे दे दो। मैं इसे कुछ बनाना चाहती हूं जब ये बड़ी हो जाएगी तब आप खुद देख लेना और चाहो तो तब ले जाना लेकिन अभी मत ले जाओ और मैडम की आंखे फिर भर आई। यह सब देख कर पायल के पापा की आंखों में भी आंसू आ गए। उन्होंने भी शायद पायल की तरह कभी नहीं सोचा होगा कि उनकी बेटी को कोई इतना प्यार भी करेगा जो उनकी तरह उसका ख्याल रखेगा और उसके बारे में सोचेगा। पायल के पापा ने कहा मैडम मैं अपने बच्चों से बहुत प्यार करता हूं और उनके बिना नहीं रह सकता। अगर आप चाहते हो कि पायल इसी स्कूल में पढ़े तो ठीक है मैं इसको इसी स्कूल में पढ़ाऊंगा चाहे मुझे थोड़ी परेशानी उठानी पड़े या फिर किराए पर रहना पड़े। यह सब सुनकर मैडम को थोड़ी शांति मिली जिससे उनके चेहरे पर खुशी दिखी। उस दिन उनका प्यार पायल को दिखाई दिया जो कब इतना गहरा हो गया उसे भी पता नहीं चला। वह घर आकर सोचने लगी कि मैडम मुझसे कितना प्यार करती हैं मेरे अंदर कोई खूबी नहीं है पता नहीं मैडम ने मुझमें ऐसा क्या देखा। जब उसने 10वीं के बाद वह विद्यालय छोड़ा उस समय उसे उस प्यार का एहसास उसकी तरफ से भी हुआ। उस प्यार का एहसास आज भी उतना ही ताजा है। आज भी वो उस पल को याद करके भावुक हो जाती है। पायल की ये कहानी बताने का मेरा उद्देश्य केवल यह है कि जिन रिश्तों के साथ हम पैदा होते हैं केवल वो ही अपने नहीं होते हम अपने व्यवहार और प्रेम से किसी को भी जीत सकते हैं दुनिया में ऐसे रिश्ते बहुत ही कम लेकिन खास होते हैं जिनमे कोई स्वार्थ नहीं होता है और उनमें से एक ऐसा रिश्ता विद्यार्थी और शिक्षक का होता है। एक अच्छा शिक्षक अपने विद्यार्थी को हमेशा सफल देखना चाहता है। इस खास रिश्ते को हमेशा संभाल कर रखें चाहे वो कोई भी रिश्ता हो उसे सदैव खुद से जोड़ कर रखें और उससे जुड़े रहें।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

– डॉ. राजेंद्र प्रसाद

सोमालिया के समुद्री लुटेरे– "द ब्लैक फ्लैग होल्डर्स"



गुरदीप कुमार

सितंबर– अक्टूबर में सोमालिया के आस–पास मौसम सुहाना हो जाता है। नीला हिंद महासागर भी शांत ही रहता है। लेकिन आबो–हवा में इस सुकून का मतलब यह नहीं है कि सब ठीक है। बड़े मालवाहक जहाजों के लिए यह समय बेहद अशांति से भरा होता है। अच्छे मौसम के कारण सोमालिया के समुद्री लुटेरे समंदर में निकल पड़ते हैं। अपनी तीव्रगति मोटरबोटों के जरिये वे किसी बड़े व्यावसायिक जहाज को निशाना बनाते हैं। लुटेरे तेजी से जहाज की तरफ बढ़ते हैं। धीमे– धीमे आगे बढ़ते समुद्री जहाज के पास वहां से खुले समंदर में भागने का कोई मौका नहीं होता। अगर जहाज में कोई सुरक्षाकर्मी तैनात नहीं है तो लूट पक्की हो जाती है। कुछ ही मिनटों के भीतर लुटेरे जहाज पर चढ़ जाते हैं। फिर हथियारों के बल पर वो जहाज को अपने नियंत्रण में कर लेते हैं। कप्तान और जहाज के अन्य कर्मी इस दौरान लाचार से हो जाते हैं। इन समुद्री लुटेरों को **सी पाइरेट्स** भी कहा जाता है। सामान्यतः ये काले रंग का एक झंडा भी अपनी बोट पर लगाकर रखते हैं इसलिए इन्हें **"द ब्लैक फ्लैग होल्डर्स"** की संज्ञा दी गयी है।

समुद्री लूट का इतिहास–

1980 के दशक की शुरुआत में, सोमालिया में गृहयुद्ध के फैलने से पहले, सोमाली मत्स्य पालन मंत्रालय और तटीय विकास एजेंसी (सीडीए) ने कारीगर मछुआरों के लिए कृषि और मत्स्य सहकारी समितियों की स्थापना पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक विकास कार्यक्रम शुरू किया। आगामी गृहयुद्ध में केंद्र सरकार के पतन के बाद सोमाली नौसेना भंग हो गई। सोमाली प्रादेशिक जल अपरिभाषित होने के साथ, विदेशी मछली पकड़ने वाले ट्रॉलरों ने सोमाली समुद्र तट पर अवैध रूप से मछली पकड़ना शुरू कर दिया और जहाजों ने सोमाली तट से औद्योगिक और अन्य कचरे को वहीं डालना शुरू कर दिया। इससे मछली के भंडार का क्षरण हुआ और स्थानीय मछुआरे अपने संसाधनों की रक्षा के लिए एक साथ आने लगे। एक क्रांति शुरू हुई, जिसमें जहाज पर कब्जा करने जैसी रणनीतियों के लिए हथियारों का इस्तेमाल किया जाना शुरू हुआ। फिरौती के भुगतान की लाभप्रदता को देखने के बाद, कुछ फाइनेंसरों ने बाद में समुद्री लुटेरों की गतिविधियों को वित्तपोषित करना शुरू कर दिया, मिलने वाले लाभ को समुद्री लुटेरों में समान रूप से विभाजित कर दिया जाता था।

समुद्र में अवैध गतिविधियों के लिए दो समुद्री इलाके सबसे ज्यादा बदनाम हैं। पहला है– अदन की खाड़ी से पूर्वी अफ्रीका तक का इलाका और दूसरा है– पश्चिमी अफ्रीका में गिनी की खाड़ी का इलाका। आज के दौर में समुद्र में होने वाली आपराधिक गतिविधियों में सबसे अहम है हथियारबंद बदमाशों का किसी जहाज को लूटना। अपहरण की ज्यादातर घटनाएँ समुद्र तट से 15 से 20 समुद्री मील के दायरे में होती हैं। ऐसे जुर्म को अंजाम देने वालों का मकसद अपने लिए आर्थिक इंसाफ हासिल करना होता है।

पश्चिमी अफ्रीका के समुद्री तट पर समुद्री डकैती की घटनाएँ तेजी से बढ़ रही हैं। आज की तारीख में ये इलाका दुनिया में समुद्री अपराध का सबसे बड़ा ठिकाना बन गया है। 2015 में 54 आपराधिक घटनाएँ हुई थीं, 2016 में 95 और 2017 में समुद्री डकैती के 97 मामले दर्ज किये गये थे। 2018 में ये और भी बढ़कर 118 तक पहुँच गईं।

20वीं सदी के अंत में, समुद्री डकैती **आतंकवाद** से जुड़ गई। 1985 में फिलिस्तीन लिबरेशन फ्रंट से जुड़े फिलिस्तीनी उग्रवादियों ने अकिल लॉरो क्रूज लाइनर का अपहरण कर लिया। उन्होंने मांग की कि इजराइल कुछ फिलिस्तीनी कैदियों को रिहा करें। इजराइल ने इनकार कर दिया और अपहर्ताओं ने दो दिनों तक जहाज पर नियंत्रण बनाए रखा। लंदन में विदेश नीति से जुड़े थिंक टैंक कैथेम हाउस के शोध में कहा गया है कि 2006 से करीब 1,600 समुद्री लूट के मामले दर्ज किए गए हैं जिसमें 54 लोगों की मौत हुई हैं।

विगत वर्षों में समुद्र में हुई डकैती की कुछ घटनाओं का विवरण इस प्रकार है–

28 मई 2007 को, एक चीनी नाविक को समुद्री लुटेरों ने मार डाला क्योंकि जहाज के मालिक अपनी फिरौती की मांग को पूरा करने में विफल रहे।

अगस्त 2011 में सोमाली समुद्री लुटेरों ने एक तेल टेंकर लूटा जिसमें 21 भारतीय भी सवार थे।

अंतर्राष्ट्रीय समुद्री ब्यूरो का कहना है कि पांच साल पहले अपने उत्कर्ष के दिनों में, सोमाली समुद्री लुटेरों ने 2011 में सोमालिया के तट पर 237 हमले किए और सैकड़ों लोगों को बंधक बना लिया।

संदिग्ध सोमालियाई डकैतों ने 2012 में एक इतालवी जहाज का अपहरण कर भारत के 17 और इटली के पांच नाविकों को बंधक बना लिया।

जनवरी 2014 में, **एमवी मरजूका** ने शुरू में एक संकट संकेत भेजा था जो दर्शाता है कि लाल सागर में समुद्री डाकुओं द्वारा हमला किया जा रहा था।

सोमालिया के समुद्री तट पर 16 भारतीयों का समुद्री लुटेरों ने उस समय अपहरण किया जब वह मालवाहक जहाज से मोगाडिस्यू जा रहे थे।

2017 में समुद्री डाकुओं ने श्रीलंकाई ध्वज वाले एक तेल टैंकर **एरिस 13** का अपहरण किया और फिरौती मिलने के बाद ही जहाज के कार्मिकों को रिहा किया।

मार्च 2017 में, यह बताया गया कि समुद्री लुटेरों ने एक **तेल टैंकर** को जब्त कर लिया है। जो जिबूती से रवाना हुआ था और मोगादिशु की ओर जा रहा था। यह 2012 के बाद से एक बड़े जहाज का पहला ''सफल'' अपहरण था।

अप्रैल 2017 में भारतीय ध्वज वाला जहाज दुबई से यमन की यात्रा पर था, जब उसका अपहरण कर लिया गया इसमें चालक दल के 11 भारतीय सदस्य सवार थे।

हिंद महासागर में समुद्री लुटेरों के आतंक के कारण दुनिया भर से 10 फीसदी से ज्यादा जहाजों ने अपना रास्ता बदला। इस कारण मिस्र जैसे देशों को नुकसान हो सकता है क्योंकि उन्हें स्वेज नहर से जहाजों के जाने से आमदनी होती है। शोध के मुताबिक मिस्र को जहाजों के रास्ता बदलने के कारण 20 फीसदी राजस्व का नुकसान हो रहा है।

इंटरनेशनल मैरीटाइम ब्यूरो के मुताबिक 2019 के तीन महीनों में छह समुद्री जहाजों से 64 लोगों को बंधक बनाया गया। शोध का मानना है कि 2009–10 में कुल साढ़े 42 करोड़ डॉलर की फिरौती समुद्री लुटेरों को दी गई। अगर बातचीत और डिलीवरी फीस को जोड़ दिया जाए तो यह लागत 83 करोड़ के आसपास आएगी। नवंबर में दक्षिण कोरिया की एक कंपनी ने अपने एक टैंकर को रिहा कराने के लिए 95 लाख डॉलर चुकाए। जनवरी 2010 में ग्रीस के सुपर टैंकर की रिहाई के लिए 70 लाख डॉलर दिए गए। यह टैंकर 16 करोड़ से ज्यादा का तेल अमेरिका ले जा रहा था।

जहाजों को कैसे लूटा जाता है ?

जब भी मालवाहक जहाज लाल सागर से सोमाली समुद्र क्षेत्र में प्रवेश करते हैं उनकी गति काफी कम होती है क्योंकि अक्सर ये जहाज पश्चिमी देशों से पूर्वी देशों के मध्य भारी भरकम सामान का आयात– निर्यात का कार्य करते हैं। आक्रमण के लिए पहले से तैयार समुद्री लड़ाके अत्याधुनिक हथियारों एवं गोला बारूद का काफी मात्रा में संचय रखते हैं। इनके पास एफएसी (फास्ट एयरक्राफ्ट) बोट्स होती हैं जो पानी में तीव्र गति से चलने में सक्षम होती हैं। पहले ये धीरे धीरे जहाज का पीछा करते हैं फिर इनमें से एक लड़ाका रस्सी फेंकता है जो जहाज पर जाकर अटक जाती है। उसी रस्सी को पकड़कर सभी जहाज पर चढ़ जाते हैं और नेविगेशन कक्ष में मौजूद लोगों को बंदी बना लेते हैं। इण्टरकॉम पर जहाज के अपहरण की घोषणा की जाती है परन्तु सभी को अपना अपना कार्य करते हुए जहाज की गति को लगातार बनाये रखने के लिए कहा जाता है। नेविगेशन में पारंगत ये समुद्री लड़ाके फिर बन्दूक की नोक पर जहाज को सोमाली क्षेत्र की तरफ ले जाते हैं। जहाज में मौजूद पैसा, नकदी व अन्य कीमती वस्तुएं छीन ली जाती है साथ ही लोगों को बंधक बनाया जाता है, फिर उनसे फिरौती वसूली जाती है। जब तक उनकी सारी मांगे पूरी नहीं होती तब तक जहाज को अपहृत रखा जाता है। जब इनकी सारी मांगे पूरी हो जाती हैं तो ये वापस उन्ही तीव्र गति बोट्स की सहायता से समुद्र के नीले पानी में खो जाते हैं।

समुद्री लूट की रोकथाम के उपाय–

संयुक्त टास्क फोर्स ने बाद में अदन की खाड़ी के भीतर एक समुद्री सुरक्षा गश्ती क्षेत्र की स्थापना करके सोमालिया के तट पर समुद्री डकैती से लड़ने की भूमिका निभाई हालांकि, समुद्री लुटेरों का पीछा करते हुए कई विदेशी नौसैनिक जहाजों ने सोमाली जलीय क्षेत्र में प्रवेश किया तो उन्हें वापस मुड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा इसे संबोधित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने जून 2008 में, सोमालिया के तट पर समुद्री डकैती के कृत्यों से निपटने के लिए सोमाली क्षेत्रीय जल में प्रवेश करने के लिए संघीय सरकार की सहमति रखने वाले राष्ट्रों को अधिकृत करने वाला एक घोषणापत्र सर्वसम्मति से पारित किया।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् ने इन घटनाओं की रोकथाम के लिए अन्य देशों की नौसेनाओं से आग्रह किया कि सोमालिया से लेकर अरब देशों तक 490 समुद्री मील के क्षेत्र की सुरक्षा का दायित्व प्रत्येक राष्ट्र का मूलभूत कर्तव्य है।

2013 तक इस क्षेत्र में संचालित तीन अंतर्राष्ट्रीय नौसैनिक टास्क फोर्स, कई राष्ट्रीय जहाजों और टास्क फोर्स ने इस क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए काउंटर–पाइरेसी ऑपरेशन में सम्मिलित किया। 2009 और 2010 के बीच, उत्तरपूर्वी सोमालिया में स्वायत्त सरकार ने अपने आधिकारिक रूप से घोषित एंटी–पायरेसी अभियान के एक हिस्से के रूप में कई सुधार किए।

लूट की दर्जनों वारदातों के बाद अब कई शिपिंग कंपनियां जहाजों पर प्राइवेट गार्ड तैनात करती हैं। लेकिन यह कानूनी मुश्किल भी खड़ी कर सकता है। दूसरा देश हथियार रखने के आरोप में जहाज के चालक दल को गिरफ्तार भी कर सकता है। अलग–अलग देशों की नौसेनाओं के संयुक्त अभियान के चलते भी समुद्री लूट की घटनाएं कम हुई हैं।

भारतीय नौसेना का योगदान–

साल 2008 से ही भारतीय नौसेना ने अपने एक युद्धपोत को अदन की खाड़ी में समुद्री डकैती विरोधी अभियानों **(एंटी पायरेसी मिशन)** के लिए नियमित रूप से गश्त करने के लिए तैनात किया है ताकि समुद्री व्यापार की सुरक्षा की जा सके। तब से लेकर अभी तक भारतीय नौसेना के प्रभारग्रहण के दौरान किसी भी जहाज का कभी अपहरण नहीं किया गया है। भारतीय नौसेना ने अब तक 250 से ज्यादा समुद्री डाकू पकड़े हैं और लगभग 150 समुद्री डाकू हमले को विफल कर दिया है। मध्य अरब सागर से सोमालिया तट के करीब समुद्री डकैतों का उच्च जोखिम वाला क्षेत्र आज भारतीय नौसेना के युद्ध पोतों की उपस्थिति के कारण सुरक्षित महसूस कर रहा है और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को भी तीव्र गति प्रदान कर रहा है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के निर्देशानुसार, भारतीय नौसेना हिन्द महासागर क्षेत्र में **सर्च एवं रेस्क्यू** मिशन को लगातार जारी रखती है। आजकल अत्याधुनिक युद्धपोतों, फ्रिगेतों (मध्यम आकार का तेज रफ्तार वाला युद्धपोत) एवं **पी–8 आई लॉन्ग रेंज मेरीटाइम सर्विलांस एयरक्राफ्ट** की सहायता से समुद्र में दूर–दूर तक निगरानी की जाती है। ये पानी में तीव्रगति से चलने वाले युद्धपोत समुद्री लुटेरों को पकड़ने में प्रभावी रूप से सक्षम होते हैं। भारतीय नौसेना सक्रिय रूप से वैश्विक एंटी पायरेसी स्कॉट फोर्स का हिस्सा है जो अदन की खाड़ी में लगातार अपनी मौजूदगी बनाये रखती है। आज भारतीय नौसेना के मारकोस कमांडो समुद्र में हर चुनौती से निपटकर भारतीय नौसेना के हर मिशन को पूरा कर रहे हैं। अदन की खाड़ी से व्यापारिक जहाजों को युद्धपोतों द्वारा सुरक्षित उनके गंतव्य पर पहुँचाने का रास्ता इतना आसान भी नहीं होता क्योंकि यमन के आतंकियों द्वारा मिसाइल हमले का खतरा हमेशा बना रहता है।

आगे की राह–

हिंद महासागर क्षेत्र विश्व व्यापार और कई देशों की आर्थिक समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि दुनिया का 75% से अधिक समुद्री व्यापार और 50% वैश्विक तेल व्यापार आई.ओ.आर. से होता था। इसके बावजूद समुद्री आतंकवाद, समुद्री डकैती, मानव तस्करी, अवैध और अनियमित रूप से मछली पकड़ना, हथियार चलाना और अवैध शिकार करना इस क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा को चुनौती देता है।

समुद्री सीमा की सुरक्षा, कारोबार के अहम समुद्री रास्तों, विशेष आर्थिक क्षेत्र और समुद्री संसाधनों का उचित इस्तेमाल होना जरूरी है। इसके लिए कानून को सही तरीके से लागू करना जरूरी है। तमाम देशों के बीच सूचना के आदान–प्रदान को बेहतर बनाने और समुद्री सीमाओं के प्रबंधन को बेहतर करने की जरूरत है। तमाम देश, क्षेत्रीय ताकतें और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय मिलकर अफ्रीका में समुद्री डकैती की चुनौती से निपटने की कोशिश कर रहे हैं। इसके लिए बहुत से क्षेत्रीय संगठन भी बनाए गए हैं जैसे कि जिबूती कोड ऑफ कन्डक्ट, अफ्रीकी संघ का लोम चार्टर और याउंडे कोड ऑफ कन्डक्ट। इसके अलावा विश्व के सभी देश जो समुद्री डकैती से प्रभावित हैं उन्हें एक साथ मिलकर एक ठोस रणनीति के साथ आगे बढ़ना चाहिए जिससे समुद्री डकैती को रोककर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को अधिकाधिक बढ़ावा मिले।

पैसों की भूख



सुदेश कुमार

आजकल जिस प्रकार से लोगों की खाने की भूख बढ़ती जा रही है, उसी प्रकार से पैसों की भूख भी तेजी से बढ़ती जा रही है। लोगों को पैसों के अलावा कुछ दिखाई ही नहीं देता है, वे अपने अपने भाई–बहन और सगे–संबंधियों तक को भूल गए हैं। पैसों के लिए तो लोग अपने सगे–संबंधियों तक को मार डालते हैं। अगर उनका बस चले तो जितने भी सगे संबंधियों की जमीन जायदाद है, वो हड़प ले। पैसे कमाने के लिए ये सब तरीके गलत हैं क्योंकि जीवन में पैसा ही सब कुछ नहीं है। अगर हमारे पास बहुत पैसा है और राशन की दुकानें बंद हो जाएं तो पैसों से हम पेट नहीं भर सकते। सबसे जरूरी है कि पैसों का सही जगह इस्तेमाल करना।

इंसान की पैसा कमाने की भूख इसलिए कम नहीं होती क्योंकि पैसा चीज ही ऐसी है, जितना हमारे पास आ जाता है, खर्चे उतने ही बढ़ जाते है। हम चाहे जितना भी पैसा कमा लें लेकिन संतुष्टि कभी नहीं होती। पैसों से हम सब कुछ खरीद सकते है, लेकिन ऐशो–आराम की जिंदगी के लिए सुख–सुविधाओं की कोई सीमा नहीं है।

किसी शायर ने सही कहा है–

"पैसों की आग ने कितने रिश्ते
जलाकर राख कर दिए,
देश बंट गए, दिल बंट गए
बंट गया सारा संसार है।"

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्ज़त करता हूं,
पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो,
ये मैं सह नहीं सकता।

– आचार्य विनोबा भावे

शिव जैसा ध्यानी नहीं, कोई...



सिकंदर कुमार

जटाओं से है जिनके जल प्रवाह माते गंग का
गले में जिन के सज रहा है हार विष भुजंग का
डुमड़ डुमड़ डुमड़ डमरू कर रहा है शिवायः शिवम्
तरल अनल गगन पवन धरा – धरा शिवायः शिवम्
वे नंदनीय के वंदनीय नंदनीय स्वरूप हैं
वे तीनों लोकों के पिता स्वरूप एक रूप हैं
कृपालु ऐसे हैं कि चित्त जप रहा है शिवायः शिवम्
तरल अनल गगन पवन धरा धरा शिवायः शिवम्
हे! नीलकंठ सौम्य नील पंकजा समान हैं।
मनुष्य क्या वे देवता के दंड के विधान हैं?
समक्ष उनके काल स्वयं भज रहा शिवायः शिवम्
तरल अनल गगन पवन धरा धरा शिवायः शिवम्

भगवान शिव का निवास स्थान कैलाश मानसरोवर है। भगवान शिव ऊंचे–ऊंचे बर्फीले पहाड़ों में विराजमान हैं। बड़े–बड़े पर्वतारोही और वैज्ञानिक भी कैलाश मानसरोवर की पहाड़ी पर पहुँचने में असमर्थ रहे इतिहास, भूगोल और विज्ञान गवाह है कि जब इतनी ऊंचे बर्फीले पहाड़ों में ऑक्सीजन की कमी होती है तो कोई भी जीव पेड़–पौधे जीवित नहीं रह सकता, तो प्रश्न उठता है कि भांग, धतूरा, शराब, तंबाकू, कोकीन, चरस, अफीम, गाँजा कहां से आ गया? कई लोग कहते हैं यह शिव का प्रसाद है कई गीतकार, चित्रकार, काँवड़–यात्री, जागरण में भगवान शिव को नशीले पदार्थ का सेवन और अपमान करते हुए दिखाया गया है। ये नशा भगवान शिव ने नहीं, विनाशकाय मंदबुद्धि मनुष्यों द्वारा लाया गया है।

कोई उनके अच्छे गुणों की तो महिमा नहीं गाता। अगर वास्तव में नशा करना है तो अपने अंदर भोलेनाथ जैसे गुण लेकर आओ। चतुराई पूरे विश्व की है व्यक्ति के भीतर और कहता है कि भोलेनाथ का प्रसाद है।

भोलेनाथ ने तो जहर भी पीया है, गले में सांप भी डाला है, तन पर भस्म भी लगाई है, श्मशानों में समाधि लगाई है तो मनुष्य भी जहर पी कर दिखाए, तन पर भस्म लगाए, अपने गले में सांप भी लपेटे, श्मशानों में समाधि लगाए। वह नहीं कर सकता, वह अपनी पूर्ति और स्वार्थ के लिए भगवान का सहारा लेता है। पैसे गिनते समय व्यक्ति का मन एकाग्र हो जाता है पर भगवान को स्मरण करते समय व्यक्ति का मन भटकता है।

नशेड़ी व्यक्ति कहता है कि उसके कारण मुझे नशे की लत लग गयी है। व्यक्ति अपने आप को दोषी नहीं मानता। जब वह उसकी वजह से नशे में पड़ गया है तो फिर उसको अपना कार, स्कूटर, घर, जायदाद आदि दे देना चाहिए। क्या अपनी संपत्ति देगा? नहीं, फिर ये क्यों कहता है की उसकी वजह से मैं चरसी बन गया। व्यक्ति इतना चतुर है कि वह पहले बुराई का संग करता है, अच्छाई का संग कभी नहीं करता। व्यक्ति की खुद की इच्छा थी कि मैं बुरा बनूँ। साधु संतों की संग में रहकर संत तो बनना नहीं था।

एक व्यक्ति के बर्बाद होने के चार कारण है, पहला पैसा जो व्यक्ति सिर्फ पैसों को ही महत्व देता है चाहे वो पैसा रिश्वत या किसी का हक मार कर कमाया हो। दूसरा स्त्री है जो व्यक्ति अपनी पत्नी या प्रेमिका को छोड़कर दूसरी स्त्री पर ध्यान केंद्रित करता है या वासना में मग्न रहता है, वह व्यक्ति बहुत ही जल्दी मृत्यु की ओर चला जाता है। तीसरा किसी भी तरह का नशा मदिरा, गाँजा, चरस, तंबाकू, कोकीन आदि और कई नशे है जो मनुष्य को बर्बादी की ओर धकेल देते है।

चौथा निन्दा, बुराई, चुगली आदि करना जो व्यक्ति बिना सच जाने निंदा बुराई चुगली करता है, वह भी अपनी जिंदगी में कभी सुखी नहीं रह सकता। हम अपने घर के कचरे को साफ करते है पर उस कचरे का क्या करें जो हम अपने मन में लेकर बैठे हैं। मनुष्य दुनिया भर का कचरा व झूठ का मैल अपने मन में लेकर बैठा है। किसी के बेटे–बेटियों को बिना सोचे–समझे झूठा बदनाम करे तो फिर भगवान भी उनके साथ वैसा ही कर देता है।

व्यक्ति जब भी कोई गलत कार्य करता है तो वह आगे–पीछे, दाऐं–बाएं देख लेता है पर ऊपर देखना भूल जाता है। इंसान को अपने वक्त पर घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि वक्त तो उन नोटों का भी नहीं हुआ जो कभी पूरा बाजार खरीदने की ताकत रखते थे।

वास्तव में व्यक्ति बहुत ही स्वार्थी है, कामवासना से भरा है, निंदा–बुराई से भरा है भगवान शिव तो दस–दस घंटे, दस–दस दिन, दस–दस महीने ध्यान समाधि में रहते थे। इंसान से कहा जाए की आप दस मिनट ही ध्यान लगा ले तो वह इतना भी नहीं कर सकता। कई लोगों को तो शिवलिंग का अर्थ ही नहीं पता। वे क्या शिवलिंग का अर्थ बता पाएंगे? परंतु वास्तव में लिंग का अर्थ संस्कृति में चिन्ह या प्रकृति होता है। कई फिल्मों व संगीतकारों ने भगवान शिव को चिलम पीते हुए दिखाया गया है। आप लोगों से निवेदन है की आपको नशा करना है तो करिये पर पर शिव को बदनाम मत करिये क्योंकि उन्होंने मानव और जगत कल्याण का लिए विष पीया था, गाँजा नहीं। आदिगुरु के रूप में सप्तऋषियों ने योग की दीक्षा दी उनको गंजेड़ी और चरसी बताकर अपमान मत करिये।

ध्यानी नहीं, शिव सारसा, ध्यानी सब गोरख, शिव जैसा ध्यानी नहीं, ध्यानी नहीं शिव सारसा, ध्यानी हो तो शिव जैसा हो,क्या अर्थ है? ध्यान का अर्थ होता है भीतर सिर्फ होना मात्र इसलिए शिव को मृत्यु का विध्वंस कहा है विध्वंस है मन का, मन ही संसार है मन ही सृजन है, मन ही सृष्टि है मन भटका तो प्रलय हो गयी।

भगवान शिव कहते हैं कि अगर किसी व्यक्ति में किसी भी तरह का अहंकार आ जाए तो शमशान घाट जाना, तुमसे भी बड़े–बड़े अहंकारी राख बने पड़े है।

वृद्धावस्था



बीर सिंह

संसार परिवर्तनशील है। इसके कण – कण में प्रत्येक क्षण परिवर्तन का चक्र चलता रहता है। वृद्धावस्था एक धीरे–धीरे आने वाली वह अवस्था है जो कि स्वभाविक व प्राकृतिक घटना है। यह कड़वा सत्य है कि आज जो बालक है, कल उसे वृद्ध होना ही होगा। लेकिन मनुष्य वर्षों तक जीवित रहना चाहता है, परंतु वृद्ध नहीं होना चाहता। बुढ़ापे का एक और अर्थ है–गिरता शरीर। ऐसा शरीर जो अब सहयोग करने को तैयार नहीं। बुढ़ापा व्यक्ति को शीघ्र ही कमजोर और अशक्त बना देता है। वृद्धावस्था : एक ओर जहाँ आनन्द और उत्साह से भर देने वाला जीवन है , वही दूसरी ओर असीमित कष्ट एवं निराशा का समय भी है। अगर एक ओर यह वरदान है तो दूसरी ओर अभिशाप भी है। वृद्धावस्था में सभी इच्छा व आशाओं की पूर्ति नहीं हो पाने के कारण निराशा जीवन में आ ही जाती है। मनुष्य जीवन की चार अवस्थाएँ होती है "बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था व वृद्धावस्था"। प्रथम तीन अवस्थाओं में व्यक्ति स्वयं शक्ति का संचार पाता है। इन अवस्थाओं में वह असम्भव से असम्भव कार्य को भी करने का सामर्थ्य रखता है, परन्तु वृद्धावस्था में व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से कमजोर हो जाता है। इच्छाओं की वृद्धि एवं आशाओं का पड़ाव इस काल में चरम सीमा पर होता है। यह एक ऐसी अवस्था है जब आँखों की रोशनी कम हो जाती है, कानों से कम सुनाई देता है, हड्डियाँ कमजोर हो जाती हैं, हाथ–पैर जवाब दे जाते हैं, हाथों पैरों में झुर्रियों की वजह से चमड़ी लटक जाती है। अतः स्थितियां और भी कठिन हो जाती हैं।

आज समाज में स्थिति ये है कि माता – पिता मिलकर अपनी चार सन्तानों को पाल सकते हैं, किन्तु चार सन्तानें मिलकर माता–पिता की देखभाल नहीं कर सकतीं। जब तक हम अपने माता – पिता पर आश्रित रहते हैं, हम उनकी हर बात सह लेते हैं , परन्तु जब वे हम पर आश्रित होते हैं , तब सच्चाई कुछ और ही होती है। अपमान वृद्धावस्था में असहनीय हो जाता है। वृद्धजनों को छोटी – छोटी बातें भी ठेस पहुँचाती हैं। आज सामाजिक व धार्मिक मर्यादाओं को नई पीढ़ी स्वीकार नहीं कर पा रही है। वे वृद्धों की उपेक्षा व निरादर करने से नहीं हिचकिचाते है। हर व्यक्ति जीवन भर अपनी मर्जी से जीवन जीता है, परन्तु वृद्धावस्था में बच्चों की रोक–टोक उनमें निराशा उत्पन्न कर देती है। अधिक टोका–टाकी उन्हें निराशावादी बना देता है। ऐसे हालात में, बूढ़ा व्यक्ति भी जीवन से थककर भगवान से यही प्रार्थना करता है कि 'हे प्रभु'! अब तो अपनी शरण में ले लो। एक वृद्ध व्यक्ति भी एक माली की तरह सोचता है, जिस प्रकार माली अपने बाग–बगीचे को देखकर खुश हो जाता है, क्योंकि उसमें माली को अपने जीवन के श्रम का दर्शन होता है उसी प्रकार वृद्धजन अपने परिवार रूपी बाग–बगीचे को देखकर आनंदित होकर झूम उठते हैं। याद रखें आप की संतान भी आपको अपने बुजुर्गों की सेवा करते हुए देख रही होती हैं। वह भी आपका उतना ही ख्याल रखेंगी। हमारे माता–पिता सदैव हमारी सफलता और समृद्धि की कामना करते हैं। हमारी खुशी और सफलता में ही उनकी खुशी दिखती हैं। अपने जीवन के सर्वोच्च सुखों का बलिदान देकर यहाँ तक कि स्वयं भूखे पेट सोकर माँ–बाप अपनी सन्तान का पालन–पोषण करते हैं।

ये वृद्धाश्रम (ओल्ड ऐज होम) की व्यवस्था कभी भी हमारे समाज का अंग नहीं थी। यह हमारे इतिहास व सांस्कृतिक मूल्यों के बिल्कुल विपरीत है। यह पश्चिम देशों की सभ्यता से धारण की गई व्यवस्था है। यह भारत जैसे देश की विडंबना है कि जिस धरती पर माता–पिता को भगवान का स्वरूप मानते हैं। उसी धरती पर उनकी यह स्थिति दयनीय है। हमारा समाज इतना अपंग और कमजोर हो गया है कि वह वृद्धावस्था में अपने माता–पिता की देखभाल नहीं कर सकता। उनकी छोटी–छोटी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता। जबकि इस ढलती उम्र में उनकी छोटी–छोटी जरूरतें होती है, उनको किसी भी बड़ी चीज की कोई ख्वाहिश नहीं रहती। आजकल मनुष्य इतना भौतिकवादी हो गया है कि वह केवल भौतिक सुखों की कामना करता रहता है। इन भौतिक सुखों की उपस्थिति में अपने बीवी–बच्चों के साथ दिन गुजर बसर करना चाहता है। फिर भी ऐसा नहीं है कि वे अपने माता–पिता की देखभाल नहीं कर सकते हैं। लेकिन कमी उनके विचारों में आ गई है। सन्तान बड़ी होकर दुनिया की मोहमाया में इतनी व्यस्त हो जाती हैं कि वृद्ध माँ–बाप इन्हें बोझ लगने लगते हैं तथा वह किसी तरह उनसे छुटकारा पाने के लिए वृद्धों के लिए बने वृद्धाश्रम में छोड़ जाते हैं। भारत में वृद्धाश्रमों की स्थापना और उसमें लगातार बढ़ती संख्या इस बात का सूचक है कि हम पारिवारिक एवं नैतिक मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं। तेजी से बदलते वक्त के साथ भारतीय समाज में भी कुछ नई प्रथाएं एवं विकृतियाँ जुड़ती जा रही हैं। इस सामाजिक आर्थिक बदलाव के दौर में अब स्त्री और पुरुष दोनों घर से निकलकर काम पर जाने लगे हैं। घर में वृद्धों के लिए उनके पास समय ही नहीं होता है। वह बुजुर्गों को घृणा की नजर से देखते हैं और उन्हें बेकार समझते हैं, बुजुर्गों को ऐसे में बहुत बुरा लगता है। वृद्धाश्रम भले ही ये हमारी संस्कृति का हिस्सा न हो, लेकिन रिश्तों के इस संकट का समाधान वृद्धाश्रम हो सकता है।

समाज का एक दूसरा पहलू यह भी है कि जो बच्चे विदेशों में काम–काज करते हैं। वे अपने साथ माता–पिता को नहीं रख पाते हैं। वे उन्हें वृद्धाश्रम में रखते हैं ताकि उनकी देखभाल अच्छे से हो सके। इसलिए वृद्धाश्रम का प्रबंध होने से वृद्धों के लिए सहारा हो गया है। आज की आवश्यकता यह है कि वृद्ध माता–पिता और लोभी बेटों के रिश्तों के संकट के समाधान हेतु वृद्धाश्रम ही एक विकल्प है। इसलिए ही भारत मे वृद्धाश्रम बनाए जाते हैं ताकि वह वहाँ जाकर बुजुर्ग लोग जीवन के अपने अंतिम पड़ाव को थोड़ा सुख–चैन से काट सके। भारतवर्ष में शुरू में जब वृद्ध आश्रम तैयार किये थे तो लोगों ने इसका विरोध करते हुए इसे पश्चिमी सभ्यता को अपनाना माना था। लेकिन आज कई वृद्ध इन वृद्धाश्रमों पर ही आश्रित हो चुके हैं। यह एक हकीकत बन चुकी है। सड़कों पर भटकते हुए बुजुर्गों के लिए यह वृद्ध आश्रम एक वरदान से कम नहीं, जहां उन्हें कम से कम सिर ढकने को छत और दो समय का खाना उपलब्ध हो जाता है। प्रकृति की रचना के अनुसार एक आयु के बाद हम सभी को इस दुनिया से विदा होना पड़ता है। हमें ईश्वर स्वरूप माता – पिता मिले हैं, उनके पास अथाह प्यार और आशीर्वाद का खजाना है। हम उनकी सेवा करते रहें। उन्हें भरपूर सम्मान प्रदान करें। समाज के लोगों को चाहिए कि वे वृद्धों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार करें। उनकी भावनाओं का ख्याल रखते हुए उनके अनुभवों का लाभ उठायें। उन्हें हँसते देखकर, खुद भी आनंदित महसूस करें। हमें घर पर ही बुजुर्गों को इतना अच्छा माहौल देना चाहिए कि उन्हें शांतिपूर्ण जीवन के लिए वृद्धाश्रम न जाना पड़े। धर्म शास्त्रों में भी बुजुर्गों के प्रति प्रेम और सम्मान रखने की शिक्षा मिलती है। लेकिन आज कल कुछ तथाकथित धार्मिक लोग भी अक्सर खुद अपनी बातों पर अमल नही करते, क्योंकि वह भी धर्म का प्रयोग केवल दिखावे के लिए, समाज में अपनी झूठी प्रतिष्ठा बढ़ाने, आर्थिक और राजनैतिक लाभ लेने के लिये करते है। हमें प्राचीन धार्मिक गुरु, पीरों व संतों के दिखाए मार्ग पर चलना चाहिए। उनकी बातें लोगों को उपदेश लग सकती हैं, पर हमें इसका फैलाव करते

रहना चाहिए। धर्म की चर्चा से किसी दूसरे के जीवन में बदलाव आये या न आये पर कम से कम, हम तो उन पर अमल करने वाले बन सकते है। शायद हमारा अनुसरण करके कुछ और लोग भी इस मार्ग को अपना लें। हमें अपनी अंतरात्मा को जगाने की जरूरत है। जब हम अपने बुजुर्गों की जिंदगी की सारी सम्पति, धन हासिल करने के लिए तैयार रहते हैं, बिल्कुल उसी तरह अपने बुजुर्गों को संरक्षण देने के लिए व उनकी सेवा करने के लिए भी तैयार रहना होगा। सत्य के इस मार्ग पर चल कर अपना यह लोक सुखी और परलोक सुहेला कर सकते हैं।



हिंदी देश की आत्मा है,
उसका आदर करना देशभक्ति
का प्रतीक है।

– सुभद्रा कुमारी चौहान

एक यादगार यात्रा



रमेश कुमार शर्मा

बात लगभग पंद्रह वर्ष पुरानी (नवम्बर 2008) की है, मैं ए.जी. हरियाणा में कार्यरत था, सायं तीन बजे के आसपास मैं अपने सहयोगियों के साथ चाय के समय कार्यालय की कैंटीन में गया हुआ था। उस समय एक बुजुर्ग सरदार जी यात्रा के प्रचार में पर्चे बाँट रहे थे और उन्होंने बड़ी ही सौम्यता से बताया कि हम चंडीगढ़ से एक बस लेकर जा रहे हैं। पर्चा मेरे हाथों में देते हुए उन्होंने बताया कि इसमें पूरा विवरण दिया हुआ है और विस्तार से बताया कि आपको इस यात्रा के लिए एल.टी.सी. का लाभ भी मिल जायेगा। मैं भी ए.जी.पंजाब से सेवानिवृत वरिष्ठ लेखाकार हूँ, मेरा नाम सरदार खुशहाल सिंह है और करीब चालीस वर्षों से यात्राऐं ले कर जा रहा हूँ। सभी सरकारी कर्मचारी मेरी बसों में जाते हैं, सबको एल.टी.सी. का भुगतान हो जाता है, आप निश्चिन्त होकर अपना नाम लिखवा दो आपको कोई एडवांस देने की भी जरूरत नहीं है। मुझे वो एक सच्चे इंसान लगे। उनका पर्चा मैंने लिया व यात्रा का विवरण पढ़कर मैं बहुत ही उत्सुक हुआ, क्योंकि मुझे यात्रा बहुत ही रोमांचकारी लगी जो कि चंडीगढ़ से जयपुर, पुष्कर, अजमेर, उदयपुर, अहमदाबाद, द्वारिका, सोमनाथ, माउंट आबू, एवं मथुरा वृन्दावन होते हुए वापिस चंडीगढ़ पहुंचनी थी। यात्रा की अवधि बारह दिन यानि (08–12–2008 से 20–12–2008) थी, यात्रा की अवधि देखकर अधिकतर लोग पीछे हट गए। कार्यालय से छुट्टी के उपरांत मैं घर पहुंचा और अपनी श्रीमती एवं बच्चों से इस यात्रा का जिक्र किया तो मेरी श्रीमती जी ने तो ज्यादा खर्चे व यात्रा अत्यधिक लम्बी होने का हवाला देकर आनाकानी की, लेकिन मेरा बेटा व बेटी बहुत ही उत्साहित हुए। मुझे कुछ दिन पहले पे–रिवीजन का 50,000/- रूपये एरियर भी मिला था और 20,000/- रूपये यात्रा अग्रिम मिलना था इसलिए मैंने यात्रा पर जाने का दृढ़ निश्चय कर लिया और अंकल को फोन करके अपनी चार सीटें बुक करवा दी, यात्रा के प्रस्थान में अभी 20 से 25 दिन का समय था। अगले ही दिन मैंने यात्रा अग्रिम के लिए प्रार्थना पत्र दे दिया, प्रशासन अनुभाग के मेरे सहयोगी व अधिकारी इतने अच्छे थे कि उन्होंने मुझसे फॉर्म भरवाकर मेरा अग्रिम मामला तुरंत जमा कर दिया। कार्यालय से घर आने पर मैंने यात्रा अग्रिम के बारे में अपनी श्रीमती से जिक्र किया तो वो कहने लगी कि मैंने यात्रा के बारे में अपनी सहेलियों के आगे जिक्र किया था, उनमें से एक अपने साथ जाने को उत्सुक है, इसमें आपको कोई एतराज तो नहीं ? उनके पति हमारे कार्यालय में मेरे सहयोगी थे, सो मैंने कोई आनाकानी नहीं की और अंकल से कहकर उनकी भी दो सीटें बुक करवा दी। जैसे ही यात्रा अग्रिम मुझे मिला मैंने तुरंत अंकल को भुगतान कर दिया। यात्रा का दिन 08–12–2008 आ गया, हम सब सायं 4 बजे अंकल के घर पहुँच गए, हमारा सामान अंकल की कैटरिंग टीम ने बस में लोड करवा दिया व खाने–पीने का व कुछ जरुरी सामान हमने अपने पास बस में ही रख लिया, हम सब अपनी–अपनी सीटों पर बैठ गए। रात भर का सफर तय करते हुए बस 09–12–2008 को सुबह 6 बजे जयपुर के आमेर किले के बाजार की पार्किंग में पहुँच गई। अंकल ने सभी यात्रियों को सूचित किया कि 2 घंटे बस यहाँ रुकेगी सभी आमेर का किला देखकर आओ तब तक नाश्ता तैयार करवाता हूँ क्योंकि अंकल अपने साथ में पूरी कैटरिंग टीम, गैस–सिलेंडर ,दालें, सब्जियां, चावल, तेल, घी, बर्तन आदि लेकर गए थे। सभी आमेर का किला देखने में व्यस्त हो गए। मैं पहले भी कई बार जयपुर घूम चूका था इसलिए अपने दोनों बच्चों को जल्दी से आमेर के किले का अवलोकन करवाया व सह यात्रियों से पूछा कि आप में से किसी ने जयगढ़ के किले में चलना है, जो इस किले से कुछ और ऊँचाई पर है, उसमें दुनिया की सबसे बड़ी 50 टन वजनी तोप सहेज कर

रखी हुई है, अगर चलना है तो थोड़ी फुर्ती दिखाओ ना जाने फिर मौका मिले न मिले। कोई भी जाने को तैयार नहीं हुआ यहाँ तक कि मेरी श्रीमती भी जाने को तैयार नहीं हुई शायद जयगढ़ किले की अत्यधिक कठिन चढ़ाई होने के कारण किसी की जाने की हिम्मत ही नहीं हुई लेकिन उत्सुक्तता वश मेरे दोनों बच्चे जयगढ़ किले में जाने को तैयार हो गए। हम तीनों कठिन व खड़ी चढ़ाई होने के बावजूद कुछ ही समय में जयगढ़ किले में पहुँच गए जो कि पहाड़ की चोटी पर स्थित है। वहां पर स्थापित दुनिया की सबसे बड़ी 50 टन वजनी तोप देख कर बच्चों की खुशी का अंदाजा लगाना मुश्किल था। वो पल उन्हें एवरेस्ट की चोटी पर विजय प्राप्त करने जैसा महसूस हो रहा था, मेरा तो बच्चों को खुश देखकर खुश होना स्वाभाविक ही था। आज भी बच्चे वो पल याद करके भावविभोर हो जाते हैं। हम जिस तेजी के साथ जयगढ़ किले पर गए थे उससे दोगुनी तेजी के साथ आमेर बाजार में बस के पास पहुँच गए। सभी यात्री हमें घूर कर देख रहे थे क्योंकि सभी नाश्ता कर चुके थे, अंकल जी भी काफी नाराज हुए। खैर हम तीनों ने जल्दी–जल्दी नाश्ता किया व बस में अपनी–अपनी सीटें ग्रहण कीं। सारा दिन हमने जयपुर घूमना था सो अंकल ने वहां से बस रवाना करवा दी। बस जयपुर के एक बाजार की पार्किंग में खड़ी की गई, अंकल ने सभी यात्रियों से कहा कि बस यहाँ 3–4 घंटे रुकेगी जो बाजार घूमना चाहे, हवामहल, नवाब की हवेली या जन्तर–मन्तर देखना चाहे या फिर जो गोविन्द देव जी के दर्शन करना चाहे सब आसपास ही हैं। जैसे ही मैंने अंकल जी से गोविन्द देव जी के मंदिर के बारे में सुना तो मैं तुरंत दर्शनार्थ तैयार हो गया। मैंने अंकल से रास्ता पूछा और तुरंत गोविन्द देव जी के मंदिर की तरफ प्रस्थान किया लेकिन मेरे सहयोगी का गोविन्द देव जी के मंदिर दर्शन में लेश मात्र भी दिलचस्पी नहीं था वह पूरे रास्ते हवामहल, जंतर–मन्त्र और नवाब की हवेली की रट लगाते रहे व मन मारकर साथ चलते रहे, मेरे बच्चे व श्रीमती जी भी उनकी हाँ में हाँ मिला रहे थे, लेकिन मेरे पीछे–पीछे सब खुसर–फुसर करते चले आ रहे थे। आपको विश्वास नहीं होगा जैसे ही मैं श्री गोविन्द देव जी के मंदिर पहुंचा मुझे एक विशेष आनंद की अनुभूति हुई। गोविन्द देव जी के दुर्लभ दर्शन जो मुझे हुए थे लेकिन मेरे पीछे–पीछे आ रहे मेरे बच्चों, मेरी श्रीमती जी, मेरे सहयोगी व उनकी पत्नी दर्शन से वंचित रहे क्योंकि मेरे दर्शन करते ही मंदिर के कपाट बंद हो चुके थे। सच में भगवान मन की भावना को पढ़ लेते हैं तभी तो श्री गोविन्द देव जी ने मुझे दर्शन देते ही अपने कपाट बंद कर लिए। उन सबकी आस्था ही नहीं थी मंदिर में भगवान के दर्शन करने की। भगवान भी इंसान के भाव देखते हैं, थोड़ी सी भी अश्रद्धा का भाव आते ही, भगवान अपने कपाट बंद कर लेते हैं। मंदिर में मुझे पता चला कि एक बजे पुनः दर्शन खुलेंगे, संकीर्तन होगा व आरती होगी। दोपहर के बारह बज चुके थे, मैंने उन सबके सामने पुनः दर्शन, संकीर्तन एवं आरती में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की क्योंकि मुझे दर्शन क्षण मात्र ही हुए थे, मेरा मन ही नहीं भरा था। मेरी श्रीमती व मेरे बच्चे मेरे सहयोगी के प्रभाव में थे, इसलिए उनकी मंदिर दर्शन, संकीर्तन व आरती में बिलकुल भी रूचि नहीं थी इसलिए वो सब हवामहल, नवाब की हवेली व जंतर–मंतर देखने के लिए चले गए। मैंने उनसे कहा कि मैं दर्शन, संकीर्तन व आरती के बाद बस के पास पहुँच जाऊँगा, तुम सब वहीं मिलना। मैंने दर्शन, संकीर्तन व आरती का भरपूर आनंद लिया, व करीब डेढ़ बजे बस के पास पहुँच गया। दोपहर का भोजन तैयार था। मैं भोजन ग्रहण कर ही रहा था वो सब भी पहुँच गए। सभी ने भोजन ग्रहण किया और थोड़ी सी चहलकदमी के बाद, बस में अपनी अपनी सीटों पर बैठ गए। कुछ ही समय बाद बस अजमेर के लिए प्रस्थान कर गई, बस सायं 6 बजे के करीब अग्रवाल धर्मशाला अजमेर पहुँच गई जो अंकल ने पहले से बुक करवा रखी थी। अंकल ने अपनी कैटरिंग टीम को सबके बैग व बेडिंग आदि उतारने के लिए कहा। सबको बोला फ्रेश–व्रेश हो लो चाय नाश्ता तैयार मिलेगा, फिर यहाँ का बाजार देखते हुए ब्रह्मा मंदिर के दर्शन करके आओ, डिनर तैयार मिलेगा। सब चाय–नाश्ता लेकर बाजार की ओर चल पड़े, कोई शोपिंग कर

रहा था। तो कोई बाजार की छटा निहारता हुआ चल रहा था, जिसका ब्रह्मा मंदिर के दर्शन का मन था उन्होंने दर्शन किए (ब्रह्मा मंदिर के बारे में एक किवंदती है कि पूरे संसार में केवल पुष्कर में ही भगवान ब्रह्मा की पूजा होती है, केवल यहीं पर पूजा का फल प्राप्त होता है)। अन्य स्थान पर ब्रह्मा जी का कोई मंदिर नहीं है, जहाँ ब्रह्मा जी की पूजा होती हो। जब हम धर्मशाला में वापिस आये तो भोजन तैयार था। सभी ने भोजन ग्रहण किया व दिनभर की थकान को देखते हुए रात 10 बजे तक सो गए। 10–12–2008 सुबह 3:30 बजे अंकल की आवाज गूंजी, सारे उठ जाओ, नहा–धो लो पवित्र पुष्कर झील में स्नान करके पूजा करनी है। मैंने पंडित जी को बोला हुआ है, जितनी जल्दी चलोगे उतनी जल्दी फ्री हो जाओगे। जिसकी इच्छा थी उसने स्नानोपरांत पूजा व तर्पण करवाया, अपनी श्रद्धानुसार पंडितजी को दक्षिणा दी, ब्रह्मा जी के पुनः दर्शन किए और वापिस धर्मशाला आ गए। अंकल जी ने ब्रंच यानि ब्रेक फास्ट कम लंच तैयार करवा रखा था, सबने ब्रंच लिया और अपने सामान की पैकिंग की अंकल की टीम ने सामान बस में लोड करवाया, सभी अपनी–अपनी सीटों पर बैठ गए और थोड़ी ही देर में बस अजमेर की तरफ, गरीब नवाज़ यानी मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के लिए चल पड़ी। दोपहर तीन बजे के करीब हम अजमेर पहुँच गए, अंकल ने बस दरगाह से एक–डेढ़ किलोमीटर पहले पार्किंग पर रुकवाई और अपनी कैटरिंग टीम को निर्देश दिया कि हमें तकरीबन दो–ढाई घंटे लगेंगे तुम उस हिसाब से डिनर तैयार रखना और अंकल जी हम सब यात्रियों को लेकर बाजार से होते हुए अजमेर शरीफ (गरीब नवाज) की दरगाह की ओर चल पड़े। सभी यात्री बाजार से खरीददारी करते हुए 4 बजे के करीब दरगाह के दरवाजे पर पहुँच गए, अंकल जी ने सब से कहा, सारे अपने जूते–चप्पल यहाँ उतार दो मैं रखवाली करता हूँ और तुम सब दरगाह पर चादर–फूल आदि चढ़ा कर आओ, दरगाह में दुनिया का सबसे बड़ा एक देग (पतीला) स्थापित है, यहाँ आने वाले सभी लोग अपनी श्रद्धा के अनुसार इस देग में रूपये व सोना–चाँदी आदि डालते रहते हैं, और पैसे इकट्ठे होने पर उर्ष के दौरान उसी देग में छः हजार लोगों के लिए शाकाहारी लंगर (नियाज) बनाया जाता है और श्रद्धालुओं में बांटा जाता है । दरगाह में सब लोगों को तकरीबन दो घंटे लग गए। सब लोग बाहर आये तो अंकल दरगाह के बाहर हमारे जूतों की रखवाली कर रहे थे और उनके माथे पर कोई शिकन तक नहीं थी। हम सब पार्किंग में पहुंचे तो डिनर तैयार था, सभी ने डिनर का आनंद लिया और बस में सवार हो गए। रात के 8 बज चुके थे। अंकल ने घोषणा करी कि अब बस उदयपुर के लिए रवाना होगी। मैंने नाथद्वारा के विशाल कृष्ण–मंदिर के बारे में सुना हुआ था जिसका अंबानी परिवार ट्रस्टी है। मैंने अंकल जी के समक्ष नाथद्वारा जाने की इच्छा प्रकट की, जो कि 30–40 किलोमीटर साइड में था। इसके लिए अंकल जी सहज ही मान गए उन्होंने ड्राईवर को बस उदयपुर की बजाय नाथद्वारा की ओर ले जाने को कहा। अंकल जी को यात्रियों की सेवा करते हुए करीब चालीस वर्ष हो गए थे इसलिए हिंदुस्तान के चप्पे–चप्पे से वाकिफ थे। चौसठ साल की उम्र में भी काफी चुस्त थे अंकल जी।

11–08–2008 सुबह 4 बजे हमारी बस नाथद्वारा बस अड्डे पर पहुंची। अंकल जी ने सभी को कहा कि सारे नहा–धो लो, मंदिर दर्शन करके आओ नाश्ता तैयार मिलेगा। सभी धर्मशाला में स्नानादि से निवृत होकर मुख्य बाजार से होते हुए नाथद्वारा के श्री नाथ जी मंदिर के द्वार पर पहुँच गए। बाजार से गुजरते समय हमें यह आभास हो रहा था जैसे हम वृन्दावन की गलियों में घूम रहे हैं। पूरे रास्ते में राधे–कृष्ण के भजन गूँज रहे थे और मंदिर के मुख्य द्वार पर तो इतना जन सैलाब उमड़ा हुआ था जिसे देखकर हमें लग रहा था कि दर्शन 3–4 घंटे से पहले नहीं होंगे लेकिन जब मंदिर के कपाट खुले तो हमें पता भी नहीं चला कि कब हम श्रीनाथ जी के समक्ष खड़े थे, मानो प्रतीत हो रहा था कि श्रीनाथ जी हमें और हम श्रीनाथ जी को एकटक निहार रहे हों। श्रीनाथ जी

के दर्शनोपरांत हम सब राधे–कृष्ण के भजनों का आनंद लेते हुए अपनी बस के पास पहुँच गए, अंकल जी ने ब्रंच तैयार करवा रखा था। सबने भोजन ग्रहण किया व बस में अपनी–अपनी सीटों पर बैठ गए, बस उदयपुर के लिए रवाना हो गई। बस सीधी धर्मशाला पहुंची। अंकल ने हमें उमेद भवन (एक ऐतिहासिक किला), नारायण सेवा संस्थान लोकल बाजार, श्री जगदीश मंदिर के दर्शन करवाए। वहां की झीलों का अवलोकन करवाते हुए हल्दीघाटी भी लेकर गए जहाँ पर महाराणा प्रताप व अकबर का भीषण युद्ध हुआ था। उदयपुर एक बहुत ही खूबसूरत शहर है जो की झीलों के शहर के नाम से भी प्रसिद्ध है और इसे राजस्थान का कश्मीर भी कहते है। यहाँ की सुन्दरता, सभी का मन मोह लेती है। रात हो चुकी थी हमारी बस धर्मशाला में आकर रुकी। अंकल ने घोषणा कि सब फ्रेश –व्रेश हो लो डिनर तैयार मिलेगा। करीब एक घंटे में भोजन तैयार हो गया, सबने अपने सामर्थ्य अनुसार ग्रहण किया और बिस्तर पकड़ा, थकान के कारण नींद बहुत गहरी आई कि अगले दिन यानी 12–12–2008 सुबह 3 बजे अंकल की आवाज गूंजी, ''सारे उठ के नहा धो लो, नाश्ता तैयार मिलेगा''। सभी तैयार हो कर नाश्ता लेकर बस में बैठ गए। अंकल हमें राजस्थान की सफल यात्रा करवा के अपने अगले गंतव्य यानी कि गुजरात के अहमदाबाद की ओर लेकर चल पड़े। सुबह 5 बजे उदयपुर से चलकर हमारी बस दोपहर बारह बजे अहमदाबाद के इस्कॉन मंदिर के पास पहुँच गई। अंकल ने बोला सभी इस्कॉन मंदिर दर्शन करो, बिग बाजार, या लोकल मार्किट घूम लो। भगवान् को भोग लग रहा था इस कारण मंदिर के कपाट बंद थे, तब तक हम बिग बाजार व लोकल मार्किट घूमे। मंदिर के कपाट खुल गए। हमने दर्शन किये। बहुत ही सुंदर मंदिर है। इसके हाल में बहुत ही मनोहारी चित्रकारी चित्रित है। जब भी कभी इस्कॉन मंदिर अहमदाबाद में विराजित राधाकृष्ण की छवि याद आ जाती है, तो मन भावविभोर हो जाता है। हम दर्शनोपरांत बस के पास पहुंचे और बस में अपनी सीटों पर बैठे अंकल हमें अहमदाबाद के गुरुद्वारा में ले गए। गुरुद्वारा बहुत ही भव्य था। हमने शीश नवाया, लंगर छका और हम सब बस में आकर बैठ गए। बस गांधीनगर के लिए रवाना हो गई जो कि गुजरात की राजधानी भी है। बस अक्षर धाम मंदिर की पार्किंग में रुकी। अंकल ने घोषणा की कि मंदिर में दर्शन कर लो। यह मंदिर स्वामी नारायण सम्प्रदाय के भगवान स्वामी नारायण का है जिसका निर्माण 1992 में हुआ था। इस मंदिर में भगवान् स्वामी नारायण की 7 फुट ऊँची स्वर्ण प्रतिमा स्थापित है। 2002 में इस मंदिर में आतंकवादी हमला भी हुआ था जिसमें करीब 200 श्रद्धालुओं की हत्या कर दी गई थी। इस कारण तब से मंदिर की सुरक्षा चाक चौबंद थी। सबने दर्शन किए व बस के पास पहुंचे, अंकल ने कहा जल्दी बस में बैठो वैष्णों माता मंदिर जाना है। सब बस में बैठे और कुछ ही देर में बस माता वैष्णो देवी मंदिर की पार्किंग में पहुँच गई। यह जम्मू कश्मीर के माता वैष्णो देवी के पैटर्न पर बना बहुत ही भव्य मंदिर है। हम सब दर्शन करके आये तो अंकल ने रात का भोजन तैयार करवा रखा था। सबने भोजन किया व बस में आकर बैठ गए। रात के 9 बज चुके थे, बस अपने नए गंतव्य द्वारिका धाम की ओर चल पड़ी। तकरीबन 12 घंटे के सफर के बाद 13–12–2008 सुबह 9 बजे बस, पहले से बुक की हुई द्वारिका धाम की एक धर्मशाला के पास में आकर रुक गई। अंकल की कैटरिंग टीम ने सबका सामान उतरवाने में मदद की व अंकल ने अपनी चिर–परिचित आवाज में सबको कहा कि फ्रेश–व्रेश हो जो, नहा–धो लो, गोमती नदी व समुन्द्र के संगम पर बने मंदिर में द्वारिकाधीश जी के दर्शन करके आओ भोजन तैयार मिलेगा। जिसका जैसा मन था, सब तैयार होकर चल पड़े। कोई समुद्र की ओर कोई बाजार की ओर। अधिकतर यात्री हमारे साथ गोमती नदी व समुद्र संगम पर स्थित श्री द्वारिकाधीश के दर्शनार्थ चल पड़े। संगम की तरफ से मंदिर जाने के लिए करीब 70–80 सीढियाँ हैं, लेकिन उत्सुक्तावश राधे–राधे जपते हुए हम मंदिर के प्रांगण में पहुँच गए। मंदिर के शिखर पर लगी ध्वजा बदली जा रही थी। वहां जाकर हमें पता चला कि मंदिर के शिखर की ध्वजा हर रोज बदली जाती है और ध्वजा भक्तों द्वारा डोनेट की जाती है लेकिन फिर भी अगर

कोई डोनेट करना चाहे तो उसकी ध्वजा तीन से चार साल बाद ही लहरा पायेगी क्योंकि इसके लिए बहुत लम्बी वेटिंग लिस्ट है। प्रांगण में दर्शनार्थियों की विशाल कतार लगी थी। हम भी कतार में लग गए। करीब दो घंटे बाद हम द्वारिकाधीश के समक्ष खड़े थे। दर्शन करके ऐसा महसूस हुआ जैसे पूरे संसार की दौलत हाथ लग गई हो। कुछ मांगने की जरुरत ही नहीं पड़ी। मेरा परिवार दर्शन करके भावविभोर हो गया। मुद्दत से द्वारिकाधीश के दर्शनों का जो सपना देख रखा था वो पूरा हुआ। मंदिर के प्रांगण में द्वारिका पीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद जी का स्थान भी था। हमने द्वारिकाधीश मंदिर से बाजार की ओर जाने का निश्चय किया। सब लोग बाजार से घूमते हुए धर्मशाला पहुंचे, भोजन तैयार था, हमने भोजन ग्रहण किया, अंकल ने कहा ''कुछ देर विश्राम कर लो फिर रुक्मणी मंदिर, गोपी कुंड और नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन के लिए चलना है''। बस थोड़ी देर बाद श्री कृष्ण–रुक्मणी मंदिर पहुच गई, अंकल ने कहा दर्शन करके आ जाओ फिर नागेश्वर ज्योतिर्लिंग चलना है। सभी ने मंदिर में श्री कृष्ण–रुक्मणी के दर्शन किए। मंदिर में श्री कृष्ण–रुक्मणी का बहुत ही सुंदर विग्रह विराजमान है। दर्शन के उपरांत सभी बस के पास पहुँच गए। बस में सवार हुए और बस कुछ ही समय में नागेश्वर ज्योतिर्लिंग पहुँच गई, मंदिर के मुख्य द्वार के पास ही शिव की विशाल मूर्ति स्थापित थी। सबको दर्शनों का लाभ मिला। जिसकी इच्छा थी उन्होंने वहां पूजा की। पूजा वहां के नियमानुसार धोती बांधकर की जाती है। मैंने पूरे नियम के साथ पूजा की, वहां के मुख्य पुजारी (पंडित जी) ने पूरे विधि विधान से पवित्र ज्योतिर्लिंग की पूजा करवाई। सच में मन को बहुत ही सुकून मिला। पूजा के बाद हम बस के पास पहुंचे। सब लोग बस में सवार हुए और थोड़ी ही देर में बस गोपी कुंड पहुंची। जिसकी श्रद्धा थी उसने पूजा की, गोपी कुंड के दर्शन किए और वहां से गोपी चंदन टीका खरीदा और सभी बस में सवार हो गए। थोड़ी देर बाद बस धर्मशाला में पहुँच गई। रात के आठ बज चुके थे, रात का भोजन तैयार था। अंकल जी ने कहा ''सारे जल्दी से फ्रेश–व्रेश हो जाओ डिनर करो और सो जाओ, सुबह द्वारका भेंट जाना है''। सभी फ्रेश होकर आये ओर भोजन ग्रहण करके बिस्तर पर ऐसे पड़े कि दिनभर की थकान की वजह से तुरंत नींद आ गई।

इस यादगार यात्रा के पूर्ण विवरण के लिए आपको ''सुगंधा'' के आगामी अंक की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

राष्ट्र भाषा के बिना
एक राष्ट्र गूँगा है।
– महात्मा गाँधी

कार्यालयीन गतिविधियाँ



सुश्री नाज़ली जे शाईन, प्रधान महालेखाकार अन्य अधिकारियों तथा कर्मचारियों के साथ लोहड़ी का पर्व मनाते हुए ।



गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार तथा मुख्य अतिथि पुरस्कार वितरण करते हुए।

कार्यालयीन गतिविधियाँ



सुश्री नाज़ली जे शाईन, प्रधान महालेखाकार
ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य में स्वच्छता अभियान के दौरान पौधारोपण करते हुए।



प्रधान महालेखाकार महोदया, ऑडिट दिवस के दौरान स्वच्छता अभियान में भाग लेते हुए।

कार्यालयीन गतिविधियाँ



प्रधान महालेखाकार ''सुगंधा'' पत्रिका का लोकार्पण करते हुए।



नव वर्ष के उपलक्ष्य में प्रधान महालेखाकार तथा वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) श्री सुखमणी साहिब पाठ के दौरान।

कार्यालयीन गतिविधियाँ



सुश्री नाज़ली जे शाईन, प्रधान महालेखाकार
राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए।



रक्तदान शिविर के दौरान रक्तदान करते हुए अधिकारी/कर्मचारी।

कार्यालयीन गतिविधियाँ



हिन्दी पखवाड़े के दौरान सुश्री रनदीप कौर औजला, वरिष्ठ उप महालेखाकार पुरस्कार प्रदान करते हुए।



हिन्दी पखवाड़े के दौरान उप महालेखाकार महोदय पुरस्कार प्रदान करते हुए।

कविता



शायर की कलम से

अवतार सिंह (तारी)

"बिन मांगे समुंदर मिले
मांगे मिले ना एक बूंद
जग में क्या ढूँढे है बंदे
खुद में खुद को ढूँढ"

"ये वक्त क्या बिगाड़ेगा
हम जैसे जानशीनों का
जब साथ चलेगा काफिला
मेरे दोस्त यार नगिनों का"

"रब मुझे माफ करना तेरे से पहले
माँ का नाम जुबां पे लाऊँगा
सारी उम्र माँ के पैर चुमूं तो भी
कर्ज चुका ना पाऊँगा
तेरी वजह से देखी दुनिया
ये बात भुला न पाऊँगा"

"उलझ सी गई है जिंदगी
रिश्तों के तानों बानो में
अब तो भीड़ सी हो गई है
शहर के मयखानों में"

"छोड़ जाएंगे एक दिन जग यारा
ढूँढोगे हमको इन अल्फाजों में
कुछ तो ऐसा करके जाएंगे दोस्त
तारी का नाम देखोगे तुम किताबों में"

"क्या खूब थे वो दिन बचपन के
पुराना घर वो गली वो मोहल्ला
कहाँ वो स्कूल गए
जब से जवां हुए है
यारों जिंदगी जीना ही भूल गए"

"तुम नहीं मेरी किस्मत में
फिर भी ना जाने
दिल का कैसा नाता है
मेरे लिखे अल्फाजों में
आज भी तेरा जिक्र आता है"

"उनका यूं रूठना हमारा मनाना
वो भी क्या था जमाना
जो हमसे घंटों कर लिया करते थे बातें
ना जाने कब हो गया मैं उनके लिए बेगाना"

"क्यों दूर रहते हैं वो लोग
जो दिल के करीब होते हैं
जिस कमबख्त ने जख्म दिए
हम उसी के लिए क्यों रोते हैं"

"वो शब्द कहाँ से लाऊं
मुझ पर तू यकीन कर ले
तुमने पहले ही सोच रखा है
की गुनहगार हैं हम"

"खुद से मिले अरसा हो गया
आईने के सामने खड़ा होकर
सोचता हूं
इस शख्स को कहीं देखा लगता है"

"दिमाग तो सौदा करता है
प्यार की कदर क्या पाएगा
दिल की सुन कर देख जालिम
हमारा जिक्र जरूर आएगा"



माँ

एकता

हिम्मत है तू मेरी
माँ तू जन्नत है मेरी
लड़ती दुनिया से
सिर्फ मेरे लिए
कभी हार जाऊं
तो हिम्मत देती है तू
मां तू जन्नत है मेरी

अबला नहीं देखा
मैंने तुझे
फिर भी तेरी आंखों में
मुझसे मिलने की
करुण पुकार को मैं
पहचान लेती हूं
दिखाती नहीं हो तुम
अपने मनोभावों को मेरे सामने
ताकि कमजोर न पड़ूं मैं
फिर भी तेरे चेहरे से मैं
तेरी बातें पहचान लेती हूं

सच और सद्कर्म का
ज्ञान कराने वाली
प्रथम शिक्षिका मेरी
हिम्मत है तू मेरी
मां तू जन्नत है मेरी

सहनशीलता और शक्ति की मिसाल है
तू मेरे लिए नारी शक्ति का प्रमाण है
द्वंद्व हुआ जब अंतर्मन में
थक हार मैं तेरे पास ही आती हूं
तू मुझे राह दिखाती है

नौ देवियों का प्रतिबिंब
मैं तुझमें ही पाती हूं
मां तू हिम्मत है मेरी
तू जन्नत है मेरी





ये दुनिया मतलबखोरों की

कुलविंदर सिंह

ये दुनिया मतलबखोरों की
बाहर से अच्छी दिखती है
अंदर से लगती चोरों की
ये दुनिया मतलबखोरों की

औरों की खुशी से दुखी है मन
सुख अपने पास हजारों है
जलते हैं, पड़ोसी की बाइक से
चाहे, अपने पास, तो कारे हैं

बाहर से सुन्दर कपड़े है
मन की अन्दर से फटी दरारें हैं
सभी अपने ही कहलाते हैं,
क्यों बात करूं मैं औरों की
ये दुनिया मतलबखोरों की

हर चीज़ मिलावटी मिलती है
कौन सुनता किसी के दिल की है
कोई मरे जिए कोई फर्क नहीं
दम निकले किसी को तरस नहीं
जब प्यार मिले, दिल खिले खिले,
वह बात थी गुजरे दौरों की
ये दुनिया मतलबखोरों की

विद्यालयों से ज्यादा मयखाने हैं
पहले से नए जमाने हैं
अच्छाई को सभी दबाते हैं
बुराई को और बढ़ाते हैं
ज्ञानवान अक्सर ही लड़ते है
शराबी बात करे ना छोरों की
ये दुनिया मतलबखोरों की

फिर भी कुछ अच्छे लोग जहाँ
मन के कुछ सच्चे लोग जहाँ
अच्छों की चाहे बहुत कमी
उनके कारण धरती है थमी

कुलविंदर तू गुनाहों से भरा
बता कितना झूठा या तू खरा
नकली फूल सुगंध नहीं देते,
क्यों बात करे तू भंवरों की

दुनिया मतलबखोरों की
बाहर से अच्छी दिखती है
अंदर से लगती चोरों की
ये दुनिया मतलबखोरों की



भूख

तुषार कांति सिन्हा

बहुत कलंकित है भूख
सृष्टि की रचना है भूख
भयावह होती है भूख
छुपाए छुपती नहीं है भूख
रूप बदल कर आती है भूख
कई पाप करवाती है भूख
चिल्ला–चिल्ला कर जताती है भूख
किस्म–किस्म की होती है भूख
पेट की भूख, प्यार की भूख, सत्ता की भूख
शोहरत और दौलत की भूख
हर भूख है हरजाई
कोई भूख होती नहीं पराई

भूख के कारण ही होते कुकर्म और अधर्म
भूखा ही जानता है भूख का मर्म,
दुनिया में भीख न होती जो भूख न होती
आदमी से आदमी की भेंट न होती जो भूख
न होती



पशु को है चारे की भूख
अधिकारी को है नोट की भूख
नेता को है वोट की भूख
भूख चटाती है जूठी पत्तल
भूख चटवा देती है अमीरों की चप्पल
भूख नहीं जानती पराया और अपना
भूख चुरा लेती है बीबी का गहना,
भूख बना देती है हैवान
भूख चुरा लेती है मन्दिर से भगवान



उदासी

रवि कुमार

जाने क्यों यह उदासी का आलम है,
क्या किसी ने दिल तोड़ा है? या भगवान् को ही माना तुमने जालिम है।
फिर भी दिन काटते चले जाते हैं, मज़ा नहीं है जीने में, फिर भी जिए चले जाते हैं।

रोजमर्रा की जिंदगी में इतने व्यस्त हो गए हैं,
देखते ही देखते रिश्ते तहस–नहस हो गए हैं,
फिर भी दिल थामे आगे बढ़ते चले जाते हैं, मज़ा नहीं है जीने में, फिर भी जिए चले जाते हैं।

जीवन के रास्ते में कई कांटे बिछे पड़े हैं, दर्द है सीने में, पर आँसू छिपाए खड़े हैं।
फिर भी मुस्कुराते हुए आगे बढ़ते चले जाते हैं, मज़ा नहीं हैं जीने में, फिर भी जिए चले जाते हैं।

जिंदगी इतनी मुश्किल है, कभी सोचा न था, इस राह को हमने चुना तो न था
इस तरह होठों से भी हँसी को चुरा लेती हो तुम, जिंदगी क्या है सिखा जाती हो तुम।
फिर भी दिन काटते चले जाते हैं, मज़ा नहीं है जीने में, फिर भी जिए चले जाते हैं।

रात आती है, नया ख्वाब बुनते हैं हम, सुबह फिर से आकर दस्तक दे जाती हो तुम।
छोड़ो यूँ हमेशा दिल दुखाना, इन राहों को मुश्किल बनाना यही बात हमेशा सोचते चले जाते हैं
मज़ा नहीं है जीने में, फिर भी जिए चले जाते हैं।

सोचा था तुझे अपना के भी जी लेंगे हम, तुम अंदर हुई तो क्या हुआ, तुम्हें छुपा के भी मुस्कुरा लेंगे हम,
तुमने फिर भी हमें ना छोड़ा, अब तो तुम्हारे साथ ही जी लेंगे हम, मज़ा नहीं है जीने में, फिर भी जिए
चले जाते हैं।



अंजू बाला

जिंदगी

जीवन जीने की चाह है जिंदगी
नई–पुरानी राह अपनाना है जिंदगी
मेरी तुम्हारी हर किसी की अपनी है जिंदगी
हर अंधेरे में एक चिराग है जिंदगी.....

मां–बाप का दिया जन्म है ये जिंदगी
उनकी हर डांट और प्यार पाना है जिंदगी
भाई–बहन और सारे रिश्ते निभाना है जिंदगी

हर बुरे दिन के बाद खुश होना है जिंदगी
पुरानी राहों को छोड़, नई राह बढ़ना है जिंदगी
बचपन जी कर युवावस्था से गुजर कर बुढ़ापा अकेले बिताना है जिंदगी
जीवनसाथी के साथ उसके नए घर आना है जिंदगी
अपने रिश्ते छोड़, नए रिश्ते अपनाना है जिंदगी

रिश्तों के तालमेल पूरा जीवन बैठाना है जिंदगी
मन से बुरी बातें भुलाना है जिंदगी
कुछ कर के दिखाना है जिंदगी,
पर कुछ ना करके भी सब कुछ वैसे ही अपनाना है जिंदगी
बच्चों की हंसी है जिंदगी,
सब बुरा भूल उनके साथ बच्चा बन जाना है जिंदगी



नए ख्वाब बनाना है जिंदगी,
पंछी की तरह खुले आसमान में उड़ना है जिंदगी
आसमान में हवा के साथ उसे छू कर पाना है जिंदगी
दूर रह कर भी अकेले जीना है जिंदगी
हर दर्द को सह कर भी खड़े होना है जिंदगी
ना तेरा ना मेरा हर दिन हंसना है जिंदगी
इसे खुल के जियें, क्योंकि फिर वापिस नहीं आयेगी ये जिंदगी.....
कभी हार ना मानना है जिंदगी, पतंग की तरह छोटी सी है जिंदगी



बेटी

नवीन कुमार

बेटी अगर तुम नहीं होती
बेटी अगर तुम नहीं होती
तो मैं चुपचाप खोया रहता
किसी मैगज़ीन के पन्नो में
और ढूंढता बहाने अगला पन्ना पलटने का
बेटी अगर तुम नहीं होती
तो बदलता रहता चैनल टीवी के
बिना रिमोट की छीना–झपटी के
बेटी अगर तुम नहीं होती
तो मेरे बाल कोई नहीं खींचता
और मैं वंचित रह जाता उस मीठे दर्द के सुखद अहसास से
बेटी अगर तुम नहीं होती
तो मुझे घोड़ा कोई न बनाता
मुझे बुढ़ापे में बचपन न सिखाता
बेटी अगर तुम नहीं होती
तो दुकान पर जाकर सिर्फ दूध ही लेकर आता
चिप्स के पैकेट और एल्पनलिबे वहीं रह जाती
बेटी अगर तुम नहीं होती
तो सन्डे को लालच देकर किस से
मालिश करवाता अपने सर पे
बेटी अगर तुम नहीं होती
तो भाई कि जरा सी चोट पर
रो–रो कर आसमां कौन सर पर उठाता

बेटी अगर तुम नहीं होती
तो पिछवाड़े के आँगन में
दिवाली पर रावण का वो छोटा पुतला
हर बार जलने से रह जाता
बेटी अगर तुम नहीं होती
तो कागज के सफेद पन्ने
कश्तियों में नहीं ढलते
बेटी अगर तुम नहीं होती
तो ये न होता..वो न होता..
बेटी अगर तुम नहीं होती
तो ये दुनिया भी नहीं होती
तो ये पिता भी नहीं होता
कोई पिता नहीं होता
बेटी अगर तुम नहीं होती
बेटी अगर तुम नहीं होती





मेरी कहानी (औरत)

धर्म सिंह मीना

हूँ मैं बेटी, हूँ मैं माँ हूँ, इस संसार की जननी मैं,
फिर क्यों हर बार और बार–बार ये कीमत मुझे चुकानी है,
क्यों इतनी बेदर्द मेरी ये कहानी है, क्यों इतनी बेदर्द मेरी ये कहानी है।

यूँ तो लोग पूजे मुझे पूजे मेरी परछाई को,
पर समझ नहीं पाती हूँ मैं क्यों इस दुनिया की सच्चाई को।
कभी निर्भया कभी श्रद्धा बनके मैं क्यों रह जाती हूँ,
बस यही सवाल है मेरा, मैं क्यों ये समझ नहीं पाती हूँ,
क्यों इन पैंतीस (35) टुकड़ों में हर बार ही मैं काटी जाती हूँ,
क्यों मैं यूँ ही घुट–घुट के मर जाती हूँ।

जीने का हक है मुझको, मुझको भी तो आगे बढ़ना है
आखिर क्यों ए मर्द हो गया इतना छोटा तेरा सीना है
औरत बन के क्यों हर बार मुझे ही ठोकरें खानी हैं,
ए मर्द तुझे क्या मुझ पर ही अपनी मर्दानगी दिखानी है।

मैं हूँ प्यारी चिड़िया मैं भी तो उड़ना चाहती हूँ,
पढ़–लिख कर मैं भी तो आगे बढ़ना चाहती हूँ,
फिर क्यों हर बार और बार–बार ये कीमत मुझे चुकानी है,
क्यों इतनी बेदर्द मेरी ये कहानी है, क्यों इतनी बेदर्द मेरी ये कहानी है।

पल–पल हर पल बस ये ही सवाल मैं खुद से पूछती हूँ,
क्यों लड़की बनकर हर बार ही मैं खुद को कोसती हूँ।
मैं हूँ दुर्गा, मैं हूँ शक्ति, मुझमें ही तो ममता बसती है,
फिर क्यों इस संसार में हो रही मेरी इज्जत इतनी सस्ती है।

फिर क्यों हर बार और बार–बार ये कीमत मुझे चुकानी है,
क्यों इतनी बेदर्द मेरी ये कहानी है क्यों इतनी बेदर्द मेरी ये कहानी है।



इंसान और पर्यावरण

अवतार सिंह (तारी)

ऊंची इमारतें खड़ी करके
जंगलों को काट शहर बना कर
ऐ इंसान! तुम्हें क्या मिला?

पंछियों के घरौंदे तोड़
वन्यजीवों का विस्थापन कर
ऐ इंसान! तुम्हें क्या मिला?

ग्रीन हाउस गैसों में बढ़ोतरी
शुद्ध हवाओं को प्रदूषित कर
ऐ इंसान! तुम्हें क्या मिला?

जल चक्र को प्रभावित
मिट्टी को बंजर बना कर
ऐ इंसान! तुम्हें क्या मिला?

कुदरत की देन
पृथ्वी की सुंदरता को नष्ट कर
ऐ इंसान! तुम्हें क्या मिला?



प्रकृति की अनमोल धरोहर
औषधीय वनस्पतियों को लुप्त कर
ऐ इंसान! तुम्हें क्या मिला?

वृक्षों को अंधाधुंध काट
फिज़ा में जहर घोल कर
ऐ इंसान! तुम्हें क्या मिला?

अब तो संभल जा न कर तबाह
प्रकृति की अनमोल धरोहर
वृक्ष लगा पर्यावरण बचा।

कार्यालय में आयोजित की गई गतिविधियाँ

आतंकवाद विरोधी दिवस

कार्यालय परिसर में दिनांक 20.05.2022 को आतंकवाद विरोधी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों को आतंकवाद विरोधी दिवस की शपथ दिलवाई गई तथा आतंकवादी गतिविधियों के प्रति जागरूकता के बारे में अवगत करवाया गया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

कार्यालय परिसर में दिनांक 22.06.2023 को एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। प्रधान महालेखाकार (ले.प.) पंजाब, चंडीगढ़ के द्वारा इस शिविर का समापन किया गया। जिसमें बहुत से अधिकारियों/कर्मचारियों ने स्वेच्छा से रक्तदान कर इस शिविर को सफल बनाया।

स्वतंत्रता दिवस

कार्यालय परिसर में दिनांक 15.08.2022 को राष्ट्र का 75 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। कार्यालय परिसर में अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा इस अवसर पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री वेंकट नाथन, प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (रक्षा सेवा) के द्वारा ध्वजारोहण किया गया तथा ध्वजारोहण के पश्चात जलपान का आयोजन किया गया।

सद्भावना दिवस

कार्यालय परिसर में दिनांक 18.08.2022 को कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को ऑनलाइन माध्यम से सद्भावना दिवस की शपथ दिलाई गई।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

कार्यालय परिसर में दिनांक 31.10.2022 से 06.11.2022 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस सप्ताह में अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपने कार्य के प्रति कर्तव्यनिष्ठ एवं जागरूक रहने को लेकर परस्पर विचार विमर्श किया।

ऑडिट दिवस

ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य में 26.11.2022 को स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया।

श्री सुखमणी साहिब पाठ

नव वर्ष 2023 के उपलक्ष्य पर कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के संगठनों द्वारा कार्यालय में श्री सुखमणी साहिब जी के पाठ का आयोजन करवाया गया व उसके बाद लंगर का भी आयोजन किया गया ताकि आने वाला वर्ष सभी के लिए सुखदायक हो।

लोहड़ी

कार्यालय परिसर में दिनांक 12.01.2023 को लोहड़ी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्पोर्ट्स विभाग के प्रधान सचिव को मुख्य अतिथि बनाया गया। इसमें स्टेट गवर्नमेंट के अधिकारियों/कर्मचारियों ने हिस्सा लिया।

गणतंत्र दिवस

कार्यालय परिसर में दिनांक 26.01.2023 को राष्ट्र का 74 वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति में गणतंत्र दिवस धूम–धाम से मनाया गया, जिसमें श्री वेंकट नाथन, प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (रक्षा सेवा) के द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

कार्यालय परिसर में दिनांक 17.03.2023 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इसके उपलक्ष्य में कैंसर डिटेक्शन कैम्प का भी आयोजन किया गया।

सेवानिवृत्ति

समय अपनी गति से चलता रहता है। कार्यालय में जिन्हें हम अपना प्रेरणा स्त्रोत मानते हैं, जिनके सक्षम कार्यकलापों से हम बहुत कुछ सीखते हैं, जिन्हें प्रतिदिन देखते हैं, अचानक पता चलता है कि वे सेवानिवृत हो रहें है। उनका दीर्घ अनुभव व मार्ग दर्शन अब हमें प्राप्त नहीं होगा। तब उनके सुखी व स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए स्नेह व सम्मान के पुष्प अर्पित करके ही संतोष करना पड़ता है। ''सुगंधा'' परिवार इन महानुभावों की कार्यालय के प्रति की गई सेवा के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करता है एवं उनके सुखी व समृद्ध जीवन की कामना करता है ।

क्र. सं.	नाम व पदनाम (श्री/सुश्री)	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	जयपाल शर्मा, व.ले.प.अ.	30.04.2022
2	निखिल मिनहास, स.ले.प.अ.	30.04.2022
3.	हेमलता, स.ले.प.अ.	17.05.2022
4.	प्रवीण कुमार सूद, स.ले.प.अ.	31.05.2022
5.	भंगीराम, सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2022
6.	कृष्ण चंद, सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2022
7.	पूनम पांडे, प्र.महालेखाकार	31.07.2022
8.	दीवान चंद, व.ले.प.अ.	05.07.2022
9.	कँवलजीत सिंह नागरा, व.ले.प.अ.	31.08.2022
10.	विजय कुमार, आशुलिपिक	31.08.2022
11.	दिलबाग सिंह, पर्यवेक्षक	30.09.2022
12.	मनमोहन सिंह, व.ले.प.	30.09.2022
13.	विजय कुमार पॉल, पर्यवेक्षक	30.11.2022
14.	सतीश कुमार जैन, स.ले.प.अ.	30.11.2022
15.	मनमोहन थापर, उप. महालेखाकार	10.01.2023 (स्वैच्छिक)
16.	राकेश कुमार, व.ले.प.अ.	16.01.2023 (स्वैच्छिक)
17.	राजिंदर कुमार, व.ले.प.अ.	31.01.2023
18.	गुरमीत सिंह, सहायक पर्यवेक्षक	31.01.2023 (स्वैच्छिक)
19.	पवन कुमार, व.ले.प.अ.	28.02.2023
20.	भाग सिंह, सहायक पर्यवेक्षक	28.02.2023 (स्वैच्छिक)
21.	निगम कुमार मेहता, पर्यवेक्षक	28.02.2023
22.	रूप सिंह, पर्यवेक्षक	28.02.2023
23.	सुभी सिंह, पर्यवेक्षक	28.02.2023
24.	कमलेश कुमारी, सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2023
25.	राजीव शर्मा, व.ले.प.अ.	31.03.2023

श्रद्धांजलि

जन्म एवं मृत्यु सब विधि का विधान है। हमें बहुत दुख होता है जब विधि द्वारा बनाए विधान के अनुसार हमारे बीच से कोई अपना प्रिय काल का ग्रास बन जाता है।

हमारे कार्यालय के निम्नांकित साथी के असामयिक निधन की पीड़ा हमें गत वर्ष सहनी पड़ी। ''सुगंधा'' परिवार दिवंगत साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परम पिता परमेश्वर से यह प्रार्थना करता है कि प्रभु उनकी आत्मा को चिर–शांति प्रदान करें तथा उनके परिवारजनों को विपदा की इस घड़ी में शक्ति प्रदान करें।

क्र. सं.	नाम व पदनाम (श्री/सुश्री)	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	नीनु गुप्ता	14.08.2022
2	सतिंदर कुमार	05.01.2022

**मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्ज़त करता हूं,
पर मेरे देश में हिंदी की इज्ज़त न हो,
ये मैं सह नहीं सकता।**

– आचार्य विनोबा भावे

ध्वजारोहण





रॉक गार्डन, चण्डीगढ़

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017